Career Companion
A future begins here ...

नई शिक्षा नीति पर आधारित

सामाजिक चेतना एवं पर्यावरण

Teacher's Manual

Class 6

Written by :
Author's Team
(Vidyalaya Prakashan)

Career Companion
A future begins here ...

A Unit of Vidyalaya Prakashan
An ISO 9001 : 2008 Certified Co.
● New Delhi ● Meerut

INDEX

Sl. No.	Book Name	Page No.
1.	भूगोल	3
2.	इतिहास	31
3.	नागरिक शास्त्र	60

पाठ-1 : विश्व में भारतः भारत के भौतिक विभाग

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. सातवाँ
2. 1947
3. 28
4. कोरोमंडल तट
5. K2
6. कश्मीर

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. गोदावरी
2. उपजाऊ
3. चंडीगढ़
4. 32,87,263
5. सुंदरवन
6. उत्तरी गोलार्द्ध

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓
3. ✗
4. ✗
5. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. इसे दक्कन का पठार और प्रायद्वीपीय पठार भी कहते हैं। यह पठार विध्याचल पर्वत से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है।
2. भारत संघ में 28 राज्य तथा 8 केन्द्रशासित प्रदेश हैं।
3. गोदावरी दक्षिणी भारत की सबसे लम्बी नदी है और इसे दक्षिणी गंगा कहा जाता है।
4. गंगा व ब्रह्मपुत्र ने मिलकर अपने मुहाने पर एक डेल्टा का निर्माण किया है; जिसे सुंदरवन डेल्टा कहते हैं।
5. भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत या बर्फ का घर फैला हुआ है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. भारत के पड़ोसी देशों में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, भूटान, नेपाल, बांग्लादेश तथा म्यांमार हैं। 1947 ई. से पूर्व पाकिस्तान और बांग्लादेश भारत के ही अंग थे। बांग्लादेश को पहले पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था। परन्तु 1971 में यह बांग्लादेश के नाम से स्वतंत्र देश बन गया। इसके अतिरिक्त मालदीव तथा श्रीलंका भी भारत के पड़ोसी देश हैं।
2. भारत के ठीक उत्तर में हिमालय पर्वत या बर्फ का घर फैला हुआ है। इनका विस्तार पश्चिम में कश्मीर से लेकर पूर्व में

असम तक है। हिमालय को उच्च, मध्य तथा लघु हिमालय में विभाजित किया जाता है। शिवालिक की पहाड़ियाँ लघु हिमालय के सुदूर दक्षिण में स्थित हैं। जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड राज्य हिमालय में स्थित हैं। गॉडविन ऑस्टिन K2, जिसकी ऊँचाई 8600 मीटर मध्य हिमालय की काराकोरम पर्वतीय श्रृंखलाओं में स्थित है। इसके अतिरिक्त नंदादेवी और कंचनजंगा हिमालय की अन्य ऊँची चोटियाँ हैं।

उच्च हिमालय में माउण्ट एवरेस्ट विश्व की सबसे ऊँची चोटी है। इसकी ऊँचाई 8848 मीटर है। यह नेपाल में स्थित है।

3. हिमालय पर्वत के दक्षिण में उत्तर भारत का विशाल मैदान है। यह समतल और उपजाऊ भूमि है। यह लम्बाई में 2500 किमी० पूरब से पश्चिम तक फैला हुआ है। सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र यहाँ की तीन प्रमुख नदियाँ है। गंगा व ब्रह्मपुत्र ने मिलकर अपने मुहाने पर एक डेल्टा का निर्माण किया है, जिसे सुंदरवन डेल्टा कहते हैं। इस मैदान में उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा हरियाणा राज्यों का विस्तार है। मैदान की मिट्टी उपजाऊ है जिसमें अनेक फसलों का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। यह पूरे देश को खाद्यान्न की पूर्ति करता है तथा लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। किसान यहाँ गेहूँ, गन्ना, धान तथा दालों का उत्पादन बड़े पैमाने पर करते हैं और यही कारण है जनसंख्या का सबसे ज्यादा घनत्व इसी क्षेत्र में पाया जाता है।

4. पूर्वी घाट के उत्तरी भाग की 'उत्तरी सरकार' तथा दक्षिणी भाग को कोरोमण्डल तट कहते हैं। पश्चिमी घाट के उत्तरी भाग को कोंकण तथा दक्षिणी भाग को मालाबार कहते हैं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **उत्तरी पर्वतीय प्रदेश :** हिमालय पर्वत श्रेणियाँ हमारे देश की उत्तरी सीमा बनाती हैं। ये पश्चिम में कश्मीर से लेकर पूर्व में आसाम तक फैली हुई है। उत्तरी पर्वतीय श्रृंखला की लम्बाई लगभग 2500 किमी० तक है। इसकी दो मुख्य पर्वत श्रेणियाँ भी हैं –

1. काराकोरम पर्वत श्रेणियाँ पामीर पठार और सिंधु नदी के बीच पश्चिम में स्थित हैं ये बहुत ऊँची पर्वत श्रेणियाँ हैं। इस क्षेत्र में बहुत–सी हिमनद पाई जाती है।

2. हिमालय इसकी दूसरी ऊँची पर्वत श्रृंखला बनाती है। ये श्रृंखलाएँ पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक फैली हुई है। इन घुमावदार पर्वत श्रेणियों की लम्बाई लगभग 2500 किमी० है। इसकी चौड़ाई पश्चिम में 450 किमी० तथा पूर्व में 150 किमी० के बीच नियत रहती है। हिमालय की तीन

प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ हैं, जो कि ऊँचाई के हिमाद्रि पर एक-दूसरे से भिन्न हैं।

2. हमारे देश में 28 राज्य और 9 केन्द्रशासित प्रदेशों का एक शक्तिशाली संघ है। ये सभी राज्य और केन्द्रशासित प्रदेश मिलकर भारत के राजनीति मानचित्र की रचना करते हैं और उसमें विविधता के रंग भरते हैं। भारत के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को निम्न तालिका के द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है।

केन्द्रशासित प्रदेश	**राजधानी**
1. अंडमान व निकोबार द्वीप समूह	पोर्टब्लेयर
2. लक्षद्वीप	कवरत्ती
3. पांडिचेरी	पांडिचेरी
4. दमन और दीव	दमन
5. दादरा और नगर हवेली	सिलवासा
6. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली
7. चंडीगढ़	चंडीगढ़
8. जम्मू कश्मीर	
9. लद्दाख	

3. **तटीय मैदान तथा द्वीप समूह :** तटीय प्रदेश में पूर्व तथा पश्चिमी घाट आते हैं। प्रायद्वीपीय पठार के पूर्व में बंगाल की खाड़ी के तटीय मैदान के समानान्तर महानदी की घाटी से दक्षिण में नीलगिरि तक दक्षिणी-पूर्व दिशा में 800 किमी० की लम्बाई में फैले पहाड़ी प्रदेश पूर्वी घाट कहलाते हैं। इसी प्रकार पश्चिम में अरब सागर के तटीय मैदान के समान्तर ताप्ती नदी के मुहाने से दक्षिण में कुमारी अन्तरीप तक 1600 किमी० तक लम्बाई में फैले पहाड़ी पश्चिमी घाट कहलाते हैं। पूर्वी घाट के उत्तरी भाग की 'उत्तरी सरकार' तथा दक्षिणी भाग को कोरोमण्डल तट कहते हैं। पश्चिमी घाट के उत्तरी भाग को कोंकण तथा दक्षिणी भाग को मालाबार कहते हैं। केरल के लैगून तथा पश्च जलखण्ड पश्चिमी तट की आश्चर्यजनक भौगोलिक विशेषताएँ हैं। भारत में लगभग 609 द्वीप हैं जिनमें 573 द्वीप बंगाल की खाड़ी में तथा 36 द्वीप अरब सागर में हैं। अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, दमन और दीव, पांडिचेरी (पुडुचेरी), दादर और नगर हवेली द्वीप समूह, बंगाल की खाड़ी में लक्षद्वीप, मिनिकॉम, अमनदीवी द्वीप समूह, अरब सागर में, मूंगे के द्वीप बंगाल की खाड़ी में पाए जाते हैं।

पाठ–2 : गृह : सौर परिवार में पृथ्वी

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. 8
2. चन्द्रमा
3. शुक्र
4. 14.96 करोड़ किमी०
5. तारा

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. मन्दाकिनी
2. अल्फा सेण्टारी
3. पुच्छल
4. 3,84,400
5. 365 1/4

ग. मिलान कीजिए–

1.	भोर का तारा	अ.	उपग्रह
2.	संध्या का तारा	ब.	बुध
3.	सबसे छोटा ग्रह	स.	बुध
4.	सबसे बड़ा ग्रह	द.	बृहस्पति
5.	सबसे चमकीला ग्रह	य.	शुक्र
6.	चन्द्रमा	र.	उपग्रह

घ. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✓
2. ✓
3. ✗
4. ✗
5. ✗

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. पृथ्वी और चन्द्रमा के मध्य लगभग 3,84,400 किमी० की दूरी है। चन्द्रमा पर वायुमण्डल नहीं है। अत: वहाँ जीवन भी नहीं है।
2. सौर परिवार में कुल 8 ग्रह हैं।
3. बुद्ध सौर परिवार का सबसे छोटा ग्रह है।
4. जो आकाशीय पिण्ड किसी तारे की परिक्रमा करते हैं तथा उसके प्रकाश से ही चमकते हैं उन्हें ग्रह कहा जाता है।
5. कुछ आकाशीय पिण्ड, अपने ग्रह की परिक्रमा करते हुए सूर्य की परिक्रमा पूरी करते हैं। जैसे चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। यह अपने ग्रह की परिक्रमा करने के कारण उपग्रह कहलाते हैं।
6. बुद्ध सूर्य का निकटतम ग्रह है। जो आयतन में पृथ्वी के

आयतन का 1/20 भाग है। यह 88 दिन में सूर्य का एक चक्कर पूरा करता है। इसे भोर का तारा भी कहते हैं।

7. हमारी पृथ्वी का एक मात्र उपग्रह चन्द्रमा है। यह पृथ्वी के काफी समीप है। पृथ्वी और चन्द्रमा के मध्य लगभग 3,84,400 किमी० की दूरी है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. नक्षत्र समूहों के अतिरिक्त आकाश में बड़े-बड़े तारा पुंज भी हैं, जिन्हें तारा पुंजक कहा जाता है। अनुमानतः आकाश में इनकी संख्या अरबों में है। जिसमें वे सफेद रंग के चमकीले मार्ग की भाँति दिखाई पड़ते हैं। भारत में इसे आकाशगंगा, यूरोप में इसे मिल्की-वे और यूनानी भाषा में गैलेक्सी कहते हैं।

2. मंगल और बृहस्पति ग्रह के मध्य लम्बे भाग में 2000 से अधिक छोटे-छोटे उपग्रहों जैसे आकाशीय पिण्ड हैं, इन्हें क्षुद्रग्रह या अवान्तर ग्रह कहते हैं। इन्हें छोटे ग्रहों के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन सही मायने में वे ग्रह नहीं हैं। ये आकाशीय पिण्ड आकाश में हजारों की संख्या में उपस्थित हैं। इनका व्यास 1 किमी से लेकर 6 किमी० तक होता है। सिरस, पलास, जूनो तथा वेस्टा इसी तरह के क्षुद्रग्रह हैं।

3. कभी-कभी पूँछक केन्द्रक धूल के आकार के कणों से लेकर बड़े-बड़े आकारों में पूँछ जैसी आकृति के आकाशीय पिण्ड अन्तरिक्ष में पाये जाते हैं। ये गैसीय पदार्थों से बने होते हैं। ये अण्डाकार पथ पर परिक्रमा करते हैं। सूर्य के निकट होने पर ये स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। रात्रि के समय आकाश में चमकते हुए ये अत्यंत सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। बहुत वर्षों की अवधि में जब वे सूर्य के समीप आते हैं तथा दृष्टिगोचर होते हैं तो इन्हें धूमकेतु या पुच्छल तारा कहते हैं। इनमें हैली नामक धूमकेतु सूर्य के चारों ओर 76 वर्ष में 5.3 अरब किमी० लम्बे कक्ष की परिक्रमा करता है। इसलिए यह 76 वर्ष बाद ही दिखाई देता है।

4. यह भी चट्टानों से बना है तथा लाल दिखाई पड़ता है इसलिए इसे लाल ग्रह भी कहते हैं। इसका व्यास चन्द्रमा के व्यास का लगभग दुगुना, 7014 किमी० है। फोबोस तथा डीमोस इसके दो उपग्रह हैं।

5. जो आकाशीय पिण्ड किसी तारे की परिक्रमा करते हैं तथा उसके प्रकाश से ही चमकते हैं उन्हें ग्रह कहा जाता है। हमारी पृथ्वी भी एक ग्रह है, जो सूर्य से प्रकाश और ताप ग्रहण करती हैं क्योंकि सूर्य पृथ्वी के सबसे नजदीक का तारा है। ग्रह अपनी कीली पर घूमते हैं तथा सूर्य की परिक्रमा करते हैं। अब तक ब्रह्माण्ड के 10 ग्रहों की खोज हो चुकी है, परन्तु केवल

8 ग्रहों को ही ग्रह की श्रेणी में रखा गया है

कुछ आकाशीय पिण्ड, अपने ग्रह की परिक्रमा करते हुए सूर्य की परिक्रमा पूरी करते हैं। जैसे चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। यह अपने ग्रह की परिक्रमा करने के कारण उपग्रह कहलाते हैं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **पुच्छल या धूमकेतु :** तारे कभी-कभी पूँछक केन्द्रक धूल के आकार के कणों से लेकर बड़े-बड़े आकारों में पूँछ जैसी आकृति के आकाशीय पिण्ड अन्तरिक्ष में पाये जाते हैं। ये गैसीय पदार्थों से बने होते हैं। ये अण्डाकार पथ पर परिक्रमा करते हैं। सूर्य के निकट होने पर ये स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। रात्रि के समय आकाश में चमकते हुए ये अत्यंत सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। बहुत वर्षों की अवधि में जब वे सूर्य के समीप आते हैं तथा दृष्टिगोचर होते हैं तो इन्हें धूमकेतु या पुच्छल तारा कहते हैं। इनमें हैली नामक धूमकेतु सूर्य के चारों ओर 76 वर्ष में 5.3 अरब किमी० लम्बे कक्ष की परिक्रमा करता है। इसलिए यह 76 वर्ष बाद ही दिखाई देता है।

   क्षुद्रग्रह या अवान्तर ग्रह : मंगल और बृहस्पति ग्रह के मध्य लम्बे भाग में 2000 से अधिक छोटे-छोटे उपग्रहों जैसे आकाशीय पिण्ड हैं, इन्हें क्षुद्रग्रह या अवान्तर ग्रह कहते हैं। इन्हें छोटे ग्रहों के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन सही मायने में वे ग्रह नहीं हैं। ये आकाशीय पिण्ड आकाश में हजारों की संख्या में उपस्थित हैं। इनका व्यास 1 किमी से लेकर 6 किमी० तक होता है। सिरस, पलास, जूनो तथा वेस्टा इसी तरह के क्षुद्रग्रह हैं।

2. पृथ्वी सौरमण्डल का तीसरा तथा अनोखा ग्रह है। इसकी आकृति गेंद के समान है और एक पूरा चक्कर लगाने में इसे 23 घंटे 36 मिनट का समय लगता है। इस पर वायुमण्डल तथा जीवन दोनों पाए जाते हैं। पृथ्वी का व्यास 12,750 किमी० और सूर्य से औसत दूरी 14.96 करोड़ किमी० है। सूर्य की एक परिक्रमा करने में इसे 365 1/4 दिन का समय लगता है। इसका एकमात्र उपग्रह चन्द्रमा है।

3. ब्रह्माण्ड एक विशाल इकाई है। इसमें अनेक प्रकार के आकाशीय पिण्ड गतिमान है। इन आकाशीय पिण्डों में मन्दाकिनियाँ या आकाशगंगा, तारों, ग्रह, उपग्रह, क्षुद्र ग्रह, धूमकेतु, उल्कापिण्ड प्रमुख हैं। ब्रह्माण्ड का व्यास 250 करोड़ प्रकाश वर्ष है।

   ब्रह्माण्ड के आकाशीय पिण्डों का अध्ययन करने वाले विद्वान

खगोल विज्ञानी और इसके अध्ययन को खगोल विज्ञान कहते हैं।

4. यह सूर्य के बाद पृथ्वी के सबसे निकट का तारा है। पृथ्वी से सबसे निकट का तारा सूर्य है। पृथ्वी से प्रोक्सिमा सेंचुरी की दूरी 4 1/3 प्रकाश वर्ष है। अन्तरिक्ष में तारों के समूह हैं जो एक निश्चित आकृति या प्रतिरूप का निर्माण करते हैं। खगोलज्ञों ने ब्रह्माण्ड में 88 तारामण्डलों की उपस्थिति बतायी है उर्सा मेजर नामक तारामण्डल भालू जैसी आकृति का है। इसी तारामण्डल में सप्तर्षि नामक सात तारों का समूह स्थित है। इसके एक सिरे पर ध्रुव तारा स्थित है, जो सदैव उत्तर दिशा की ओर संकेत करता है।

5. हमारा सौरमण्डल ग्रहों, क्षुद्रग्रहों, नीहारिकाओं, पुच्छल तारों, सूर्य, उपग्रहों तथा उल्काओं से मिलकर बना है। इसे सौर परिवार भी कहते हैं। सूर्य के परिवार को सौरमण्डल कहते हैं। जिन आकाशीय पिण्डों का अपना कोई प्रकाश नहीं होता, वे तारों और सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं तथा साथ ही उनका ताप भी बढ़ता है। ऐसे आकाशीय पिण्डों को ग्रह कहते हैं। यह आठ हैं।

   आठ ग्रह इस प्रकार हैं–बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण तथा वरुण। ये सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर अण्डाकार कक्ष के अन्दर चक्कर लगाते हैं इस ग्रहों के टूटे हुए पिण्डों को उपग्रह कहते हैं। ये ग्रह सभी अपने-अपने ग्रहों के चारों ओर चक्कर लगाते हैं और सूर्य से प्रकाशित होते हैं।

   सूर्य सौर परिवार का जन्मदाता हैं। इसका व्यास 13,52,000 किमी० है और यह पृथ्वी से 109 गुना बड़ा है। इसका भार 2×10^{27} टन है। सूर्य की रचना मुख्यतः हाइड्रोजन और हीलियम जैसी गैसों से हुई है।

पाठ-3 : ग्लोब और मानचित्र : पृथ्वी का प्रतिरूप

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. भूमध्य रेखा　　2. दो
3. विशाल क्षेत्र का मानचित्र　　4. 11
5. 360

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. प्रतिरूप (मॉडल)　　2. भूमध्य रेखा
3. मानचित्र

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✓ 2. ✗
3. ✓ 4. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. ग्लोब पृथ्वी का छोटा गोलाकार प्रतिरूप (मॉडल) है जो पृथ्वी के भौतिक लक्षणों को प्रर्दिशत करता है। यह प्लास्टिक या गत्ते का बना होता है।
2. दिशाएँ 10 होती हैं जिनके नाम नेऋत्य और क्रम इस प्रकार हैं– उर्ध्व, ईशान, पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नेत्रमध्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और अधों। एक मध्य दिशा भी होती है। इस तरह कुल मिलाकर 11 दिशाएँ हुई।
3. इन रेखाओं का एक सैट जो ध्रुवों के मध्य पूर्वी–पश्चिमी दिशा में वृत्ताकार रूप में खींचा गया है अक्षांश रेखाएँ कहलाता है।
4. रेखाओं का दूसरा सैट जो उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों को मिलाते हुए अर्धवृत रूप में खींचा गया है इसे देशान्तर रेखाएँ कहा जाता है।
5. दक्षिणी क्षेत्र पर सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं। इसलिए इस क्षेत्र में प्रकाश और गर्मी की मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है। इसी कारण इसे शीतोष्ण कटिबन्ध की संज्ञा दी जाती है।
6. एक ही देशान्तर रेखा पर स्थित सभी स्थानों पर समय एकसमान होता है। उसे स्थानीय समय कहते हैं।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. **स्थानीय समय :** एक ही देशान्तर रेखा पर स्थित सभी स्थानों पर समय एकसमान होता है। चूंकि पृथ्वी की आकृति गोलाकार है इसलिए पृथ्वी पर सभी स्थानों पर एक ही समय पर सूर्योदय नहीं होता। किसी एक स्थान पर सुबह सूर्योदय का समय है तो किसी दूसरे स्थान पर दोपहर का समय है, तीसरे स्थान पर सूर्यास्त का समय है और किसी चौथे स्थान पर रात का समय होता है।

   मानक समय : स्थानीय समय विभिन्न याम्योत्तरों के कारण स्थान–स्थान पर भिन्न–भिन्न होता है। प्रत्येक देश ने अपना एक समान समय तय कर रखा है जिसे मानक समय कहते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रामाणिक समय एक प्रामाणिक देशान्तर का स्थानीय समय होता है। भारत में $82\frac{1}{2}^\circ$ पूर्वी देशान्तर, जो इलाहाबाद के निकट नैनी से गुजरती है, के समय को मानक समय माना गया है। यह समय ग्रीनविच समय से 5 घंटा 30 मिनट आगे रहता है।

2. **अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा :** 180° याम्योत्तर, अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा कहलाती है। कोई भी नाविकँ, जो इस रेखा को पूरब से पश्चिम की ओर पार करता है, उस नाविक से इसे पार करने में आधा समय लेता है जो इसे पश्चिम से पूरब की ओर पार करता है या एक दिन पहले पार कर लेगा। और; यदि इसे वह पश्चिम से पूरब की ओर पार करता है तो एक दिन का समय अधिक लेगा। अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा अक्षांश याम्योत्तर से 180° पूर्व या पश्चिम के अनुरूप है जो ग्रीनविच मेरिडियन के सामने पड़ती है।

3. **देशान्तर और समय में संबंध :** पृथ्वी पर 360 देशान्तर रेखाएँ हैं। पृथ्वी अपने अक्ष (धुरी) पर 24 घंटे में एक पूरा चक्कर लगाती है। किसी समय का स्थानीय समय देशान्तर रेखा की सहायता से जाना जा सकता है।

4. **ग्लोब की कमियाँ या दोष**

1. ग्लोब में कुछ कमियाँ भी पायी जाती हैं। जैसे-ग्लोब केवल सम्पूर्ण पृथ्वी के अध्ययन के लिए ही अधिक उपयोगी है। पृथ्वी के एक विशिष्ट क्षेत्र का अध्ययन करने में अधिक लाभकारी नहीं है।

2. ग्लोब किसी एक देश, राज्य, नगर या क्षेत्र के विस्तृत अध्ययन के लिए उपयोगी नहीं है।

3. पृथ्वी बहुत विशाल है और केवल ग्लोब के अन्दर उसका प्रकटीकरण सम्भव नहीं है।

5. **मानक समय :** स्थानीय समय विभिन्न याम्योत्तरों के कारण स्थान-स्थान पर भिन्न-भिन्न होता है। प्रत्येक देश ने अपना एक समान समय तय कर रखा है जिसे मानक समय कहते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रामाणिक समय एक प्रामाणिक देशान्तर का स्थानीय समय होता है। भारत में 82½° पूर्वी देशान्तर, जो इलाहाबाद के निकट नैनी से गुजरती है, के समय को मानक समय माना गया है। यह समय ग्रीनविच समय से 5 घंटा 30 मिनट आगे रहता है।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **मानचित्र का इतिहास :** मानचित्र बनाने का इतिहास बहुत प्राचीन है। प्रथम मानचित्र ईसा से 2300 वर्ष पूर्व बनाया गया था, जो सख्त चिकनी मिट्टी से बने मेज पर बनाया गया था। प्राचीन काल के लोग कई प्रकार की तकनीकों का प्रयोग मानचित्र बनाने के लिए करते थे। प्रजाति के लोग पशुओं की गहरे रंग की खाल को काटकर मानचित्र बनाते थे। इसे फिर हल्के रंग की खाल पर सिल देते थे। यह महासागरों का प्रदर्शन

करती थी। प्रशान्त महासागर के द्वीपों में निवास करने वाले सरकंडों से मानचित्र बनाते थे। मिस्र के निवासी टोलेमी ने मानचित्र कला के लोगों को समक्ष रखा।

मानचित्रों के प्रकार : मानचित्र दो प्रकार के होते हैं जिनमें प्रमुख प्रकार के मानचित्र निम्नलिखित हैं –

1. लघु मापनी मानचित्र : जब समस्त संसार या किसी महाद्वीप जैसे विशाल क्षेत्र का मानचित्र छोटे कागज पर बनाना हो, तो उसे लघु मापनी मानचित्र कहते हैं।

2. दीर्घ मापनी मानचित्र : जब किसी नगर या गाँव जैसे छोटे क्षेत्र का मानचित्र बनाना हो, तो दीर्घ मापनी का प्रयोग किया जाता है। ऐसे मानचित्रों को दीर्घ मापनी मानचित्र कहते हैं।

2. **ग्लोब :** ग्लोब पृथ्वी का छोटा गोलाकार प्रतिरूप (मॉडल) है जो पृथ्वी के भौतिक लक्षणों को प्रदर्शित करता है। यह प्लास्टिक या गत्ते का बना होता है जिस पर विश्व का भौतिक लक्षणों वाला मानचित्र बना होता है। इसकी सहायता से विश्व के महत्वपूर्ण शहरों, सागरों, महासागरों, खाड़ियों, पर्वतों, नदियों, महाद्वीपों आदि के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थी ग्लोब की सहायता से पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना तथा उसके आकार के विषय में आसानी से सीख सकते हैं। बड़े आकार के ग्लोब भूगोल की प्रयोगशालाओं में रखे रहते हैं क्योंकि उन्हें एक जगह से दूसरी जगह आसानी से नहीं ले जाया जा सकता। पॉकेट ग्लोब को विद्यार्थी और शिक्षक आसानी से अपनी जेब में रख सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर इन्हें फुला सकते हैं।

ग्लोब की उपयोगिता ग्लोब की उपयोगिता इस प्रकार है–

1. ग्लोब पृथ्वी का त्रिमीय चित्र है। इसलिए ग्लोब पृथ्वी का वास्तविक चित्रण करता है।

2. ग्लोब पर उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव की सटीक स्थिति दिखाई पड़ती है।

3. ग्लोब पर अक्षांश और देशान्तर रेखाएँ, महासागर, महाद्वीपों, पठारों, पर्वतों और द्वीपों को भी देखा जा सकता है।

4. ग्लोब को एक धुरी पर घुमाकर विश्व के किसी इच्छित स्थान को देखा जा सकता है।

5. आजकल ऐसे ग्लोब भी मिलते हैं, जिन्हें तोड़-मरोड़ कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर सरलतापूर्वक ले जाया जा सकता है।

3. **अक्षांश एवं देशान्तर रेखाएँ :** जब हम ग्लोब को ध्यानपूर्वक

देखते हैं, तो हमें इस पर काल्पनिक रेखाओं के दो सैट दिखाई देते हैं। इन रेखाओं का एक सैट जो ध्रुवों के मध्य पूर्वी-पश्चिमी दिशा में वृत्ताकार रूप में खींचा गया है अक्षांश रेखाएँ कहलाता है। रेखाओं का दूसरा सैट जो उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों को मिलाते हुए अर्धवृत के रूप में खींचा गया है। इसे देशान्तर रेखाएँ कहा जाता है। रेखाओं के दोनों सैट ग्लोब पर एक जाल का निर्माण करते हैं, जिसे ग्रिड कहते हैं। इन रेखाओं की सहायता से हम पृथ्वी पर किसी भी स्थान की स्थिति का पता लगा सकते हैं। (पेज 20 से चित्र देखे)

अक्षांश एवं अक्षांश रेखाएँ : पृथ्वी को दो बराबर गोलार्द्धों में विभाजित करने वाली काल्पनिक रेखा भूमध्य रेखा कहलाती है। ये गोलार्द्ध उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाते हैं। पृथ्वी पर स्थानों की स्थिति जानने में यह रेखा बहुत महत्वपूर्ण है। यह सबसे बड़ी वृत्ताकार रेखा है।

यदि हम ग्लोब पर नजर डालें तो हमें क्षैतिज और लम्बवत् रेखाएँ दिखाई पड़ती हैं। क्षैतिज रेखाएँ क्षैतिज के याम्योत्तर कहलाती हैं। ये रेखाएँ भी काल्पनिक हैं।

उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव के मध्य सभी क्षैतिज रेखाएँ अक्षांशीय रेखाएँ हैं तथा ये सभी भूमध्य रेखा के समानान्तर हैं। इसलिए इन्हें अक्षांश रेखाएँ कहते हैं। भूमध्य रेखा का अक्षांश 0° (शून्य) है।

4. **ग्लोब की कमियाँ या दोष**

1. ग्लोब में कुछ कमियाँ भी पायी जाती हैं। जैसे-ग्लोब केवल सम्पूर्ण पृथ्वी के अध्ययन के लिए ही अधिक उपयोगी है। पृथ्वी के एक विशिष्ट क्षेत्र का अध्ययन करने में अधिक लाभकारी नहीं है।

2. ग्लोब किसी एक देश, राज्य, नगर या क्षेत्र के विस्तृत अध्ययन के लिए उपयोगी नहीं है।

3. पृथ्वी बहुत विशाल है और केवल ग्लोब के अन्दर उसका प्रकटीकरण सम्भव नहीं है।

5. पृथ्वी पर निम्नलिखित कटिबन्ध पाए जाते हैं-

उष्ण कटिबन्ध : यह कटिबन्ध विषुवत् रेखा के दोनों ओर कर्क वृत्त तथा मकर वृत्त (0^o-$23\frac{1}{2}^o$ उत्तरी अक्षांश 0^o-$23\frac{1}{2}^o$ दक्षिणी अक्षांश) के मध्य विस्तृत है। इस कटिबन्ध पर सूर्य पूरे वर्ष सीधा चमकता है। अर्थात् यहाँ 21 जून को कर्क वृत्त पर और 22 दिसम्बर को मकर वृत्त पर तथा 21 मार्च और 23 सितम्बर को विषुवत रेखा पर सूर्य की सीधी

किरणें पड़ती हैं। इसलिए इस कटिबन्ध में अधिक गर्मी पड़ती है अत: इसे उष्ण कटिबन्ध क्षेत्र कहते हैं।

शीतोष्ण कटिबन्ध : यह कटिबन्ध उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क वृत्त और आर्कटिक वृत्त (23½°-66½° उत्तरी अक्षांश) तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर वृत्त और अण्टार्कटिक वृत्त के मध्य (23½°-60½° दक्षिणी अक्षांश) स्थित है। इस क्षेत्र पर सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं। इसलिए इस क्षेत्र में प्रकाश और गर्मी की मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है। इसी कारण इसे शीतोष्ण कटिबन्ध की संज्ञा दी जाती है।

शीत कटिबन्ध : यह कटिबन्ध उत्तरी गोलार्द्ध में आर्कटिक वृत्त तथा उत्तरी ध्रुव के मध्य (60½°– 90° उत्तरी अक्षांश) तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में अण्टार्कटिक वृत्त और दक्षिणी ध्रुव के मध्य (60½°– 90° दक्षिणी अक्षांश) फैला है। इस कटिबन्ध पर सूर्य की किरणें तिरछी पड़ने के कारण यहाँ प्रकाश और गर्मी की मात्रा बहुत कम होती है। इसलिए इस कटिबन्ध पर कड़ी सर्दी पड़ती है और वर्ष भर बर्फ जमी रहती है। बहुत अधिक सर्दी के कारण इस कटिबन्ध को शीत कटिबन्ध कहा जाता है।

पाठ-4 : पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. हिमालय
2. किलिमंजारो
3. कर्नाटक में
4. ऑस्ट्रेलिया का पठार
5. ये सभी

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. शिखर
2. जापान
3. गति
4. गंगा का मैदान
5. पर्वतों

ग. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. पर्वतारोहण या पहाड़ चढ़ना शब्द का आशय उस खेल, शौक अथवा पेशे से है जिसमें पर्वतों पर चढ़ाई, स्कीइंग अथवा सुदूर भ्रमण सम्मिलित हैं।
2. मृदा प्रदूषण मृदा में होने वाले प्रदूषण को कहते हैं यह मुख्यत: कृषि में अत्यधिक कीटनाशक का उपयोग करने या ऐसे पदार्थ जिसे मृदा में नहीं होना चाहिए। उसके मिलने पर होता है।
3. पृथ्वी के अन्दर का पिछला पदार्थ पृथ्वी की सतह के छिद्रों से बाहर निकलकर ठंडा होकर पृथ्वी की सतह पर एकत्र हो जाता

है, तो ज्वालामुखी पर्वत का निर्माण करता है।

4. ये पर्वत सामान्यत: शृखंलाओं के क्रम में होते हैं जो सैकड़ों किमी० में फैले होते हैं। इन पर्वतों के उदाहरण हैं- हिमालय पर्वत (एशिया), आल्पस (यूरोप), एंडीज (दक्षिणी अमेरिका), रॉकीज (उत्तरी अमेरिका) इसकी संतह ऊबड़ खाबड़ तथा शिखर शंक्वाकार होती है हिमालय पर्वत नवीनतम वलित पर्वत है।

5. पर्वतीय क्षेत्रों मे लोगों का जीवन कठिन होता है मैदानी क्षेत्रों का जीवन पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना में सरल होता है। मैदानों में घर बनाना, सड़कें बनाना, रेलमार्ग बनाना उद्योग स्थापित करना, पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना में अधिक आसान होता है।

घ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. **पर्वतों के लाभ :** पर्वतों पर कठोर जलवायु एवं ऊबड़-खाबड़ भू-आकृति के कारण बहुत कम लोग रहते हैं। कृषि के लिए भी ये अधिक उपयोगी नहीं होते परन्तु पर्वतों से अनेक नदियाँ निकलती हैं। ये जल के संग्रहागार होते हैं। पर्वतों से नदियों द्वारा लाये गये जल का प्रयोग सिंचाई तथा जल विद्युत के उत्पादन के लिए किया जाता है। पर्वतों में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। वनों से हमें ईंधन, चारा तथा अन्य उत्पाद जैसे गोंद रेजिन इत्यादि प्राप्त होते हैं। अनेक पर्यटक पर्वतों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने आते हैं।

2. सामान्यत: मैदानी क्षेत्र सबसे अधिक घने बसे क्षेत्र हैं। मैदानों की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है जो कृषि के लिए बहुत उपयोगी है। मैदानों में सड़कें तथा रेलमार्ग बनाना सुगम होता है। समतल भूमि होने के कारण मैदानी क्षेत्रों के बड़े-बड़े नगरों का विकास हुआ है। भारत में गंगा का मैदान सबसे अधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र है।

3. **भूमि का उचित प्रयोग :** प्राय: देखा जाता है कि हम भूमि का प्रयोग गलत तरीके से करते हैं, जैसे-कृषि योग्य उपजाऊ भूमि पर मकान बनाना। इसी प्रकार हम घरेलू कूड़ा-करकट, औद्योगिक अवशिष्ट किसी भी भूमि पर डाल देते हैं, जिससे मृदा प्रदूषण होता हैं। भूमि का उपयोग वनों, चरागाहों, कृषि, आवास आदि के लिए योजनाबद्ध तरीके से किया जाना चाहिए। हमें प्रकृति के इस महत्वपूर्ण वरदान का प्रयोग गलत तरीके से नहीं करना चाहिए। उपलब्ध भूमि केवल हमारे ही उपयोग के लिए नहीं है। अन्य जीवों के लिए भी है। यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम प्रकृति के इस अनमोल उपहार को आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रखें।

4. **भ्रंशोत्थ पर्वत :** धरातल पर दरार पड़ने से कुछ भाग नीचे धँस जाता और कुछ ऊपर उठ जाता है। ऊपर उठे हुए खंड को उत्खंड (हार्स्ट) तथा नीचे धँसे हुए खंड को द्रोणिका भ्रंश (ग्राबेन या रिफ्ट वैली) कहा जाता है। यूरोप के ब्लैक फॉरेस्ट पर्वत तथा वॉसजेस पर्वत इस तरह के पर्वत तंत्र के उदाहरण हैं जबकि राइन घाटी द्रोणिका भ्रंश (रिफ्ट वैली) का उदाहरण है।

5. **पृथ्वी की सतह :** यह सब जगह समान नहीं है। कहीं हमें समतल भूमि दिखाई देती है तो कहीं ऊँचे पर्वत, पहाड़ियाँ, पठार एवं घाटियाँ दिखाई देती हैं। इसका आशय है कि पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के स्थल रूप पाए जाते हैं।

ये स्थल रूप दो प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप बनते हैं। प्रथम, आन्तरिक प्रक्रियाओं के कारण और दूसरे, बाह्य प्रक्रियाओं के कारण। पृथ्वी की आन्तरिक प्रक्रियाओं के कारण बहुत से स्थानों पर पृथ्वी की सतह कहीं ऊपर उठ जाती है तो कहीं नीचे धँस जाती है। आप जानते हैं कि पृथ्वी की सतह के नीचे अत्यधिक ताप के कारण चट्टानें पिघली हुई अवस्था में रहती हैं। इन पिघली हुई चट्टानों में सदैव गति होती रहती है। ये चट्टानें पृथ्वी की सतह को ऊपर उठाती तथा नीचे गिराती रहती है।

बाह्य शक्तियाँ जैसे बहता हुआ जल, हिमनद, पवन एवं समुद्री लहरें, चट्टानों को निरन्तर काटती रहती है। मौसम में परिवर्तन के कारण एवं वर्षा के जल के चट्टानों के अन्दर जाने से चट्टानों में दरारें पड़ जाती है और ये टूटने लगती हैं। दिन-रात के तापमान में अन्तर होता है।

ङ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **पर्वत :** पृथ्वी की सतह की प्राकृतिक ऊँचाई है। पर्वत का शिखर छोटा तथा आधार चौड़ा होता है। यह आस-पास के क्षेत्र से बहुत ऊँचा होता है। कुछ पर्वत बादलों से भी ऊँचे होते हैं।

जैसे-जैसे हम ऊँचाई पर जाते हैं, तापमान कम होता जाता है तथा वायु का घनत्व भी कम होता जाता है। कुछ पर्वत सदैव बर्फ से ढके रहते हैं। जब यह बर्फ पर्वतीय ढालों पर धीरे-धीरे नीचे खिसकती है तो इसे हिमनद या हिमानी कहा जाता है। कठोर जलवायु एवं ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति के कारण पर्वतों में बहुत कम लोग निवास करते हैं। पर्वतों में रेलमार्ग एवं सड़क मार्ग बनाना भी कठिन होता है। पर्वतों में कृषि योग्य भूमि भी कम होती है।

पर्वतों के प्रकार : पर्वत तीन प्रकार के होते हैं :-

1. वलित पर्वत : इनका निर्माण पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों

के प्रभाव के कारण धरातल की शैलों में वलय पड़ने से होता है। ये पर्वत सामान्यत: शृंखलाओं के क्रम में होते हैं जो सैकड़ों किमी में फैले होते हैं। इन पर्वतों के उदाहरण हैं–हिमालय पर्वत (एशिया), आल्पस (यूरोप), एंडीज (दक्षिणी अमेरिका), रॉकीज (उत्तरी अमेरिका)। इसकी सतह ऊबड़-खाबड़ तथा शिखर शंक्वाकार होती है हिमालय पर्वत नवीनतम वलित पर्वत है। इसी पर्वत में विश्व के सर्वोच्च पर्वत शिखर पाये जाते हैं। भारत की अरावली पर्वत शृंखला विश्व की सबसे पुरानी वलित शृंखला है। अपरदन की प्रक्रिया के कारण यह शृंखला घिस गई है। उत्तरी अमेरिका के अप्लेशियन तथा रूस के यूराल पर्वत गोलाकार दिखाई देते हैं एवं इनकी ऊँचाई कम है। यह बहुत पुराने वलित पर्वत हैं।

कुछ ऐसे भी पर्वत हैं जो समुद्र के अन्दर हैं और जिन्हें हम देख नहीं सकते।

2. भ्रंशोत्थ पर्वत : धरातल पर दरार पड़ने से कुछ भाग नीचे धँस जाता और कुछ ऊपर उठ जाता है। ऊपर उठे हुए खंड को उत्खंड (हार्स्ट) तथा नीचे धँसे हुए खंड को द्रोणिका भ्रंश (ग्राबेन या रिफ्ट वैली) कहा जाता है। यूरोप के ब्लैक फॉरेस्ट पर्वत तथा वॉसजेस पर्वत इस तरह के पर्वत तंत्र के उदाहरण हैं जबकि राइन घाटी द्रोणिका भ्रंश (रिफ्ट वैली) का उदाहरण है।

2. **विभिन्न स्थलाकृतियों का महत्व :** विभिन्न स्थलाकृतियाँ हमारे जीवन के लिए विभिन्न प्रकार से उपयोगी होती है:-

पर्वतों के लाभ : पर्वतों पर कठोर जलवायु एवं ऊबड़-खाबड़ भू-आकृति के कारण बहुत कम लोग रहते हैं। कृषि के लिए भी ये अधिक उपयोगी नहीं होते परन्तु पर्वतों से अनेक नदियाँ निकलती हैं। ये जल के संग्रहागार होते हैं। पर्वतों से नदियों द्वारा लाये गये जल का प्रयोग सिंचाई तथा जल विद्युत के उत्पादन के लिए किया जाता है। पर्वतों में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। वनों से हमें ईंधन, चारा तथा अन्य उत्पाद जैसे गोंद रेजिन इत्यादि प्राप्त होते हैं। अनेक पर्यटक पर्वतों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने आते हैं।

3. **पर्वतों एवं मैदानी क्षेत्रें में रहने वाले लोगों की जीवन-शैली में अन्तर :** पर्वतों और मैदानों में रहने वाले लोगों की जीवन शैली में अन्तर होता है। पर्वतीय क्षेत्रों में लोगों का जीवन कठिन होता है। मैदानी क्षेत्रों का जीवन पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना में सरल होता है। मैदानों में घर बनाना, सड़कें बनाना, रेलमार्ग बनाना, उद्योग स्थापित करना, पर्वतीय क्षेत्रों की तुलना में अधिक आसान होता है। पर्वतीय क्षेत्रों में लोग सीढ़ीदार खेत बनाकर छोटे-छोटे खेतों में कुछ फसलें उगाते हैं, जबकि कुछ

मैदानी क्षेत्रों में विस्तृत कृषि की जाती है। इस प्रकार की कृषि में ट्रैक्टरों तथा अन्य मशीनों का प्रयोग किया जाता है और अनेक नगदी फसलें उगाई जाती है। पर्वतीय क्षेत्रों में लोग प्रायः छोटे-छोटे घर बनाकर दूर-दूर छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं। कुछ मैदानी क्षेत्रों में बड़े-बड़े घर तथा घनी बस्तियाँ पाई जाती हैं।

4. **पठारों के लाभ :** पठारी क्षेत्र खनिज सम्पदा में धनी हैं। विश्व के बहुत से खनन क्षेत्र पठारी भागों में स्थित है। अफ्रीका का पठार सोना एवं हीरों के खनन के लिए प्रसिद्ध है। भारत में छोटा नागपुर के पठार में लोहा, कोयला तथा मैंगनीज के बहुत बड़े भण्डार पाये जाते हैं। कुछ पठारी क्षेत्रों में जल प्रपात भी होते हैं क्योंकि यहाँ नदियाँ ऊँचाई से गिरती हैं। इन जल प्रपातों से जल-विद्युत उत्पन्न की जा सकती है। भारत में छोटा नागपुर पठार पर स्वर्ण रेखा नदी पर स्थित हुंडरन जल प्रपात तथा कर्नाटक में जोग जल प्रपात, इस प्रकार के जल प्रपातों के उदाहरण हैं। लावा पठार की काली मिट्टी उपजाऊ होती है एवं खेती के लिए काफी अच्छी होती हैं। कई पठारों में रमणीय स्थल होते हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

मैदानों के लाभ : सामान्यतः मैदानी क्षेत्र सबसे अधिक घने बसे क्षेत्र हैं। मैदानों की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है जो कृषि के लिए बहुत उपयोगी है। मैदानों में सड़कें तथा रेलमार्ग बनाना सुगम होता है। समतल भूमि होने के कारण मैदानी क्षेत्रों के बड़े-बड़े नगरों का विकास हुआ है। भारत में गंगा का मैदान सबसे अधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र है।

पाठ-5 : पृथ्वी के प्रमुख परिमण्डल

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 71%
2. एशिया
3. स्थलमण्डल
4. आर्कटिक
5. जैवमण्डल

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. पृथ्वी
2. नेपाल
3. यूरेशिया
4. अमेजन
5. 7,34,81,000

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✓

3. ✓ 4. ✓

घ. निम्नलिखित के नाम बताओ-

1. माउन्ट एवरेस्ट
2. आर्कटिक महासागर
3. आस्ट्रेलिया
4. प्रशांत महासागर
5. अंटर्कटिका महाद्वीप

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. पृथ्वी के जो 7 सबसे बड़े ठोस सतह के टुकड़े है उन्हें महाद्वीप कहा गया है और उन्हें अलग-अलग नाम भी दिया गया है जिनके नाम कुछ इस प्रकार हैं- जैसे- एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, अंटार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया।
2. इस प्रकार पृथ्वी के चार परिमण्डल है। जैसे - स्थलमण्डल, वायुमण्डल, जलमण्डल और जीवमण्डल है।
3. हमारी पृथ्वी का 71 प्रतिशत से भी अधिक भाग जल से घिरा है।
4. जैवमण्डल पृथ्वी का वह परिमण्डल है जहाँ जीवन मिलता है जैवमण्डल अन्य परिमण्डलों की तुलना में बहुत सीमित क्षेत्र में पाया जाता है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. पृथ्वी पर पाँच महासागर हैं -
   1. प्रशांत महासागर
   2. अटलांटिक महासागर
   3. हिंद महासागर
   4. दक्षिणी महासागर और
   5. आर्कटिक महासागर
2. जैवमण्डल में सूक्ष्म जीवाणु, असंख्य जीव-जन्तु और विभिन्न प्रजातियाँ पायी जाती हैं। विद्वानों का अनुमान है कि हमारी पृथ्वी पर एक लाख प्राणियों तथा तीन लाख पादपों की प्रजातियाँ विद्यमान हैं। पृथ्वी की सभी प्रजातियाँ एक-दूसरे पर निर्भर है उदाहरण के लिए, पेड़-पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते हैं वे उत्पादक कहे जाते हैं। पेड़-पौधे अन्य प्राणियों को भी भोजन प्रदान करते हैं उन्हें उपभोक्ता कहते हैं।
3. पर्यावरण संरक्षण के उपाय : पर्यावरण संरक्षण आज की एक अनिवार्य आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण के प्रमुख उपायों का विवरण इस प्रकार है।
   1. वनों की अनियमित कटाई को रोका जाएँ।
   2. वनों की सुरक्षा के कारगर उपाय किये जाएँ।

3. वृक्षारोपण को प्रोत्साहन दिया जाएँ।

4. कृषि की दोषपूर्ण पद्धतियों को दूर करके वैज्ञानिक तरीके से कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन दिया जाएँ।

5. पर्यावरण संरक्षण के कानूनों को कठोरतापूर्वक लागू किया जाएँ।

4. **स्थल मण्डल :** पृथ्वी के ठोस भाग को स्थलमण्डल या भूपटल कहते हैं। यह चट्टानों तथा मिट्टी की पतली-पतली पर्तो का बना होता है, जिसमें जीवों के लिए पोषक तत्व पाए जाते हैं। भूपटल की मोटाई महासागरों के नीचे लगभग 8 किमी० है। और महाद्वीपों के नीचे यह परत लगभग 32 किमी० गहरी है। यहाँ जल और स्थल का विस्तार है। स्थल का विस्तार पृथ्वी के समस्त क्षेत्र के लगभग 29 प्रतिशत भाग पर है।

5. विश्व के सात महाद्वीप एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका है।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. महासागर लवणीय जल का पिण्ड है जो पृथ्वी के लगभग 70. 8% में विस्तृत है और इसमे पृथ्वी का 97% जल समाहित है। एक महासागर जल के किसी भी बडे निकाय को भी सन्दर्भित कर सकता है। जिसमे विश्व महासागर पारस्परिक रुप से विभाजित है। महासागर के पाचँ विभिन्न क्षेत्रों की परिचय करने के लिये भिन्न नामों का प्रयोग किया जाता है- क प्रशांत (वृहत्तम), अटलाण्टिक, भारतीय, दक्षिणी और उत्तरध्रवीय महासागर (क्षुद्रतम)। समुद्री जल ग्रह के लगभग 361,000,000 किमी० मे विस्तृत है।

विशाल ताप भण्डार के रुप मे कार्य करते हुए, महासागर जलवायु और मौसम के स्वरुप, कार्बन चक्र को प्रभावित करता है।

समुद्र विज्ञानी:- भौतिक और जैविक स्थितियों के आधाार पर समुद्र को विभिन्न ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज क्षेत्रों में विभाजित करते है। पैलेजिक क्षेत्र मे खुले समुद्र में सतह से समुद्र तल तक जल स्तम्भ होता है। यह आलोकांचल को सर्वाधिाक जैवविविध बनाता है पौधो और सूक्ष्म शेवाल (मुक्त तैरने वाले पादप प्लवक) प्रकाश संश्लेषण पृथ्वी के वायुमण्डल में 50% ऑक्सीजन बनाता है। महाद्वीपीय मग्नतट जहाँ समुद्र शुष्कभूमि तक पहुंचता है, कुछ सौ मीटर या उससे कम की गहराई के साथ अधिक उथला होता है। मानव गतिविधि का महाद्वीपीय मग्नतट पर अत्यधिक प्रभाव पडता है।

समुद्र जलः- समुद्री जल मे ऑक्सीजन, कार्बन डाईआक्साइड और नाइट्रोजन सहित बडी मात्रा मे घुली हुई गैसे होती है। यह गैस विनिमय समुद्र की सतह पर होता है। जीवांशम ईधन के दहन के कारण वातावरण मे कार्बन डाई ऑक्साइड की बढती सान्द्रता समुद्री जल मे उच्च सान्द्रता की ओर ले जाती है जिसके परिणामस्वरुप महासागरीय अम्लीकरण होता है। यह व्यापार परिवहन और भोजन और अन्य संसाधनों तक अभिगमन का साधन भी प्रदान करता है। जिनमे समुद्री प्रदूषण, अत्यधिक मत्स्याखेट, और महासागरों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, जैसे की महासागरीय अम्लीकरण समुद्र तल परिवर्तन शामिल है। तटीय जल जो मानव गतिविधि से सबसे अधिक प्रभावित होते है, विशेष रुप से असुरक्षित होते है।

2. विश्व में कुल सात महाद्वीप हैं। विश्व के महाद्वीपों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

1. एशिया : यह सबसे बड़ा महाद्वीप है। संपूर्ण भू-भाग का एक-तिहाई भाग इसके द्वारा घिरा है। यह महाद्वीप पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है। भूमध्य रेखा, कर्क रेखा तथा आर्कटिक वृत्त इस महाद्वीप से होकर गुजरते हैं। एशिया को यूरोप से यूराल पर्वतमालाएँ अलग करती हैं। यूरोप और एशिया जुड़कर 'यूरेशिया' बनाता है।

2. यूरोप : आकार के अनुसार यूरोप विश्व का छठा सबसे बड़ा महाद्वीप है। इसका क्षेत्रफल 1.050 करोड़ वर्ग किमी० है। यह महाद्वीप एशिया के पश्चिम में स्थित है। यह महाद्वीप एशिया और अफ्रीका से मिला हुआ है। पूर्व में यूराल और काकेशस पर्वत तथा कैस्पियन सागर यूरोप को एशिया से अलग करते हैं। इसके उत्तर में आर्कटिक महासागर, पश्चिम में अटलांटिक महासागर और दक्षिण में भूमध्य सागर स्थित है। यूरोप में अनेक प्रायद्वीप और द्वीप समूह स्थित हैं।

आस्ट्रेलिया की खोज 1770 ई० में जेम्स कुक ने की थी और बोलिंग शासेन ने 1820 ई० में अण्टार्कटिका की खोज की थी।

3. अफ्रीका : एशिया के बाद यह दूसरा बड़ा महाद्वीप है। भूमध्य रेखा, कर्क रेखा तथा मकर रेखा इस महाद्वीप से होकर गुजरती है। संसार का सबसे गर्म मरुस्थल 'सहारा' भी अफ्रीका में है। यह महाद्वीप चारों ओर से सागरों तथा महासागरों से घिरा है।

3. **स्थल मण्डल :** पृथ्वी के ठोस भाग को स्थलमण्डल या भूपटल कहते हैं। यह चट्टानों तथा मिट्टी की पतली-पतली पर्तों का बना होता है, जिसमें जीवों के लिए पोषक तत्व पाए

जाते हैं। भूपटल की मोटाई महासागरों के नीचे लगभग 8 किमी० है।

वायुमण्डल : पृथ्वी चारों ओर से गैस की एक परत से घिरी हुई है, इसको वायुमण्डल कहते हैं। यह गैसों का मिश्रण है। यह हमें सांस लेने के लिए हवा प्रदान करता है तथा सूर्य के हानिकारक प्रभाव को भी यह कम करता है। यह पृथ्वी की सतह के न्यूनतम 1600 किमी० ऊँचाई तक विस्तार वाला है।

जलमण्डल : पृथ्वी को नीला ग्रह कहा जाता है, क्योंकि इसका 71 प्रतिशत से भी अधिक भाग जल से घिरा है तथा 29 प्रतिशत ही भू-भाग है। पृथ्वी पर जल विभिन्न रूपों में पाया जाता है महासागरों के अतिरिक्त यहाँ जल की नदियाँ बहती हैं।

जैवमण्डल : जैवमण्डल पृथ्वी का वह परिमण्डल है जहाँ जीवन मिलता है। जैवमण्डल अन्य परिमण्डलों की तुलना में बहुत सीमित क्षेत्र में पाया जाता है। जहाँ पर स्थलमण्डल, जलमण्डल और वायुमण्डल परस्पर मिलते हैं, वहीं एक संकरी पेटी के रूप में जैवमण्डल का विस्तार है। जैवमण्डल में जीवन के लिए आवश्यक सभी दशायें उपलब्ध हैं। जैवमण्डल में सूक्ष्म जीवाणु, असंख्य जीव-जन्तु और विभिन्न प्रजातियाँ पायी जाती हैं।

पाठ-6 : घूर्णन एवं परिक्रमण

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 24 घण्टे
2. पृथ्वी का परिक्रमण
3. 21 जून को
4. मार्च
5. 23 सितंबर

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. प्रकाश
2. 24
3. कर्क रेखा
4. 66 ½°

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✓
3. ✓
4. ✓

घ. मिलान करो -

1. 21 जून
2. 22 दिसंबर,
3. बराबर दिन-रात
4. पृथ्वी का घूर्णन

ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. घूर्णन:- पृथ्वी द्वारा एक दिन मे अपने काल्पनिक अक्ष पर घूमने को घूर्णन कहते हैं। यह अपने अक्ष (धुरी) पर पश्चिम

से पूर्व की ओर घूमती है और 24 घंटे (23 घंटे 56 मिनट तथा 40.91 सेकंण्ड) मे एक चक्कर पूरा करती है।

2. अपनी धुरी पर घूमने के अतिरिक्त पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा भी करती है। सूर्य लगभग वृत्ताकार भाग के मध्य में स्थित है जिसे कक्षा कहते है। इस प्रकार पृथ्वी के सूर्य के चारों और गति करने को परिक्रमण कहते है।

3. अधिवर्ष, ऐसा वर्ष होता है जिससे एक दिन या एक माह अधिक होता है। इसका उद्देश्य कलेण्डर या पंचांग के वर्ष को खगोलीय वर्ष के साथ बनाकर रखना है। कलेण्डर या पंचाग वर्ष में पूरे पूरे दिन नही हो सकते हैं। लेकिन खगोलीय घटनाओं को लगने वाला समय पूरे पूरे दिनों मे विभाजित नही हो पाता है।

4. पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने मे 24 घंटे समय लगता है।

च. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. सौरमण्डल के अन्य ग्रहों की भाँति पृथ्वी भी अपने अक्ष पर घूमते हुए सूर्य की परिक्रमा करती है। पृथ्वी की गति दो तरह की होती है– घूर्णन तथा परिक्रमण। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर एक निश्चित पथ पर घूमती है, जिसे हम कक्षा के नाम से जानते हैं। पृथ्वी के पथ को हम एक काल्पनिक तल के ऊपर निहित मानते हैं, जिसे हम कक्षीय तल कहते हैं।

2. **दिन-रात का होना –** पृथ्वी के पास अपना प्रकाश नहीं होता पृथ्वी सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशवान है। चूँकि यह अपनी धुरी पर घूमती है इसलिए इसका जो आधा भाग सूर्य के सामने पड़ता है वह प्रकाशित होता है तथा यह घटना दिन कहलाती है। इसके विपरीत जिस आधे भाग पर प्रकाश नहीं पड़ता वहाँ अँधेरा होता है तथा यह घटना रात कहलाती है। यह भौगोलिक प्रक्रिया लगातार चलती रहती है तथा दिन के पश्चात् रात तथा रात के पश्चात् दिन होता रहता है। यह प्रक्रिया पृथ्वी की उत्पति के समय से ही होती आ रही है।

   चूँकि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, अत: इसका अँधेरा भाग धीरे-धीरे सूर्य के सामने आता है तथा आधा प्रकाशित भाग दूर चला जाता है। इस प्रकार दिन के बाद रात होती है।

3. **दिन-रात होने के कारण-**

   यह समझने के लिए हम एक प्रयोग करेंगे। अपने हाथ में एक ग्लोब और एक लैम्प लीजिए तथा मेज पर उन्हें एक सीध में रख दीजिए। अब लैम्प जलाइए। लैम्प का प्रकाश ग्लोब के

सामने पड़ने वाले भाग को प्रकाशित करता है, जबकि ग्लोब का पीछे वाला भाग अन्धकार में रहता है। ग्लोब का प्रकाशित भाग दिन को तथा अन्धकारमय भाग रात को प्रकट करता है। अब लैम्प के सामने ग्लोब को धीरे-धीरे घुमाइए। आप देखेंगे कि ग्लोब के विभिन्न भाग धीरे-धीरे प्रकाशित होते जाते हैं और अनेक भाग अन्धकार में डूबते जाते हैं।

4. **परिक्रमा या अक्ष झुकाव का प्रभाव**

पृथ्वी पर सभी दिन एक समान नहीं होते हैं। कभी इतनी गर्मी पड़ती है कि हमें कूलर या पंखा चलाना पड़ता है, कभी इतनी सर्दी पड़ती है कि हम स्वयं को गर्म रखने के लिए ऊनी वस्त्र पहनते हैं या आग तापते हैं। कभी दिन बड़े होते हैं तथा कभी रातें बड़ी होती हैं। इसका कारण पृथ्वी की धुरी पर सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते समय एक तरफ को झुका होना है। पृथ्वी का अपनी कक्षा पर परिक्रमा और अक्ष पर झुकी होने के दो महत्त्वपूर्ण प्रभाव होते हैं -

क. दिन-रात का छोटा-बड़ा होना

ख. ऋतुएँ

छ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **घूर्णन का प्रभाव :** पृथ्वी की लगातार गति के कारण ही दिन-रात होते हैं। हमें पता है कि पृथ्वी प्रकाश रहित एक ग्रह है। यह सूर्य से प्रकाश ग्रहण करती है। एक समय में पृथ्वी का एक भाग ही सूर्य से प्रकाश का सामना करता है। घूर्णन के कारण हर समय सूर्य के सामने पृथ्वी का नया भाग विद्यमान रहता है। इसीलिए जब पृथ्वी के एक भाग में दिन होता है, तो दूसरे भाग में रात होती है। (पेज 36 से चित्र लें।)

क. दिन-रात का होना – पृथ्वी के पास अपना प्रकाश नहीं होता पृथ्वी सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशवान है। चूँकि यह अपनी धुरी पर घूमती है इसलिए इसका जो आधा भाग सूर्य के सामने पड़ता है वह प्रकाशित होता है तथा यह घटना दिन कहलाती है। इसके विपरीत जिस आधे भाग पर प्रकाश नहीं पड़ता वहाँ अँधेरा होता है तथा यह घटना रात कहलाती है। यह भौगोलिक प्रक्रिया लगातार चलती रहती है तथा दिन के पश्चात् रात तथा रात के पश्चात् दिन होता रहता है। यह प्रक्रिया पृथ्वी की उत्पति के समय से ही होती आ रही है।

चूँकि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, अतः इसका अँधेरा भाग धीरे-धीरे सूर्य के सामने आता है तथा आधा प्रकाशित भाग दूर चला जाता है। इस प्रकार दिन के बाद रात होती है।

प्रयोग

दिन-रात कैसे होते हैं ? यह समझने के लिए हम एक प्रयोग करेंगे। अपने हाथ में एक ग्लोब और एक लैम्प लीजिए तथा मेज पर उन्हें एक सीध में रख दीजिए। अब लैम्प जलाइए। लैम्प का प्रकाश ग्लोब के सामने पड़ने वाले भाग को प्रकाशित करता है, जबकि ग्लोब का पीछे वाला भाग अन्धकार में रहता है। ग्लोब का प्रकाशित भाग दिन को तथा अन्धकारमय भाग रात को प्रकट करता है। अब लैम्प के सामने ग्लोब को धीरे-धीरे घुमाइए। आप देखेंगे कि ग्लोब के विभिन्न भाग धीरे-धीरे प्रकाशित होते जाते हैं और अनेक भाग अन्धकार में डूबते जाते हैं।

इस प्रकार से यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने पड़ता है, वहाँ दिन और जो भाग सूर्य के सामने नहीं रहता है, वहाँ रात होती है। इस प्रकार पृथ्वी पर 28 घण्टे में दिन-रात का एक चक्र पूरा हो जाता है। ग्लोब पर वह वृत्त जो दिन- रात का विभाजन करता है, उसे प्रकाश वृत्त कहते हैं।

2. **ऋतुएँ** – पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा तथा अपनी धुरी पर झुकाव कई प्रकार की ऋतुओं को उत्पन्न करते हैं। इन्हें वसंत, ग्रीष्म, पतझड़, वर्षा तथा शरद ऋतुओं के नाम से जानते हैं।

ऋतु परिवर्तन – पृथ्वी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^\circ$ के कोण पर झुकी हुई है। इसी झुकाव के कारण यह अपने तल पर $66\frac{1}{2}^\circ$ का कोण बनाती है इसी अक्ष के झुकाव के कारण पृथ्वी का एक गोलार्द्ध ही सूर्य के सामने आता है। इसी के फलस्वरूप मौसम जन्म लेते हैं। यह क्रिया ऋतु परिवर्तन कहलाती है।

ऋतुओं के प्रकार

1. बसंत – 21 मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर होता है तथा उत्तरी शीतोष्ण कटिबन्ध में वसंत ऋतु होती है। इस समय दिन-रात की अवधि कर्क और मकर वृत्तों पर समान होती है।

2. ग्रीष्म – 21 जून को सूर्य कर्क रेखा ($23\frac{1}{2}^\circ$ उ०) पर लम्बवत चमकता है। 30° उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुक जाता है और सूर्य का प्रकाश अधिकतम समय तक भाग पर पड़ता है इसे ग्रीष्म संक्रांति भी कहते हैं तथा उत्तरी शीतोष्ण कटिबन्ध में ग्रीष्म ऋतु होती है।

3. पतझड़ – 23 सितंबर को सूर्य की किरणें भूमध्य रेखा की ओर पड़ने लगती हैं और उत्तरी शीतोष्ण कटिबन्ध में पतझड़ ऋतु होती है। पेड़ अपनी पत्तियों को नीचे गिरा देते हैं।

4. शरद – जब सूर्य मकर रेखा के ठीक ऊपर रहता है तो ताप की मात्रा में कमी होती है। इस समय उत्तरी गोलार्द्ध में शरद ऋतु तथा दक्षिणी गोलार्द्ध मे बसंत ऋतु होती है। इस ऋतु को उत्तरी शीतोष्ण कटिबन्ध में शीत ऋतु कहा जाता है।

3. **घूर्णन** – पृथ्वी द्वारा एक दिन में अपने काल्पनिक अक्ष पर घूमने को घूर्णन कहते हैं। यह अपने अक्ष (धुरी) पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है और 24 घंटे (23 घंटे 56 मिनट तथा 40.91 सेकंड) में एक चक्कर पूरा करती है। इसका अक्ष एक काल्पनिक धुरी है। पृथ्वी का यह अक्ष अपने कक्ष-तल के साथ $66\frac{1}{2}^{\circ}$ का कोण बनाता है। पृथ्वी की धुरी पृथ्वी के केंद्र से होकर गुजरती है तथा उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों को जोड़ती है।

परिक्रमण : अपनी धुरी पर घूमने के अतिरिक्त पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा भी करती है। सूर्य लगभग वृत्ताकार भाग के मध्य में स्थित है जिसे कक्षा कहते हैं। इस प्रकार पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर गति करने को परिक्रमण कहते हैं। इसे वार्षिक गति भी कहते हैं। एक पूरा चक्कर लगाने मे यह $365\frac{1}{4}$ दिन का समय लेती है।

जिसकी गणना हम कैलेण्डर से करते हैं। गणना की सुविधा के लिए 6 घण्टे की अवधि तीन वर्ष तक छोड़ देते हैं और चौथे वर्ष में 18 घंटे की अवधि को जोड़ते हैं। इससे एक दिन बढ़कर वर्ष 366 दिन का हो जाता है यही कारण है कि प्रति चौथे वर्ष फरवरी 29 दिन की होती है। इसे हम अधि वर्ष या लीप वर्ष कहते हैं। वर्ष 2016 ऐसा ही अधि वर्ष है और अगला अधि वर्ष 2020 में आयेगा।

पृथ्वी 1,07,280 किमी० प्रति घंटे की चाल से सूर्य की एक परिक्रमा $365\frac{1}{4}$ दिनों में पूरी करती है।

पृथ्वी एक दीर्घवृत्ताकार पथ पर सूर्य के चारों ओर घूमती है। इसे पृथ्वी का परिक्रमा पथ कहते हैं।

पाठ-7 : भारतः जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. ग्रीष्म
2. जून
3. मानसूनी
4. मेघालय

ख. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✗
3. ✓
4. ✓
5. ✗

ग. मिलान करो-

1. दिसंबर से जनवरी
2. मार्च, अप्रैल, मई तथा जून
3. जुलाई तथा अगस्त
4. अत्युष्ण सूखी पवन
5. वृक्ष अपने पत्तों को गिरा देते हैं।

घ. निम्नलिखित प्रत्येक कथन के लिए केवल एक भौगोलिक शब्द लिखिए :

1. मानसूनी पवनें
2. लू
3. नेशनल पार्क
4. प्राकृतिक वनस्पति

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. **मौसम तथा जलवायु**

   थोड़े समय के लिए किसी स्थान विशेष की वायुमण्डलीय अवस्थाओं जैसे- तापमान, वायुदाब, वायु वेग, दिशा, बादल, धूप, वर्षा तथा आर्द्रता; तथा पवनों की दिशा ही वहा का मौसम होता है।

   हमारे देश में सर्दी, गर्मी और वर्षा ऋतुएँ होती हैं। इस प्रकार की जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है। इसके विपरीत गर्मियों में मैदान बहुत गर्म तथा जाड़ों में ठंडे होते हैं। दूसरी ओर तटीय मैदानों की जलवायु सम अर्थात न अधिक ठंडी और न अधिक गर्म होती है। प्रायद्वीप भारत का भूमध्य रेखा के पास का दक्षिणी भाग वर्ष भर गर्मी का अनुभव करता है।

2. **शीत ऋतु :** यह ऋतु प्राय: नवंबर माह के उत्तरार्ध से आरंभ होती है तथा फरवरी में समाप्त होती है। शीत ऋतु में शीत लहर उत्तर से दक्षिण की ओर चलती है। भारत के किसी भी भाग में सूर्य की खड़ी किरणें नहीं पड़ती हैं। परिणामस्वरूप पूरे देश में कड़ाके की ठंड पड़ती है।

3. **वन्य जीवों का संरक्षण :** वन्य जीवों के संरक्षण के लिए हमारी सरकार ने कई योजनाएँ चलाई हैं, जैसे टाइगर प्रोजेक्ट, हाथी प्रोजेक्ट तथा घड़ियाल और मगरमच्छ प्रोजेक्ट। राष्ट्रीय पशु 'बाघ' के संरक्षण के लिए भारत सरकार ने 17 राज्यों के 37,761 वर्ग किमी० क्षेत्रफल में 28 टाइगर रिजर्व स्थापित किए हैं। नेशनल पार्क वह वन क्षेत्र है जहाँ वन्य जीवों को सुरक्षित रखा जाता है। भारत में कुल 99 राष्ट्रीय पार्क हैं। भारत सरकार ने बाघों, शेरों, हिरनों तथा मोर के शिकार पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा दिया है। प्रतिवर्ष अक्टूबर माह का प्रथम सप्ताह

वन्य जीव सप्ताह के रूप में मनाया जाता है जो लोगों को वन्य जीवों के प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के प्रति जागरूक करता है।

4. इस प्रकार के वन पश्चिमी घाट, पूर्वी हिमालय तथा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में पाए जाते हैं। यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत लगभग 200 सेमी० है। ये इतने घने होते है कि सूर्य का प्रकाश जमीन तक नहीं पहुँच पाता हैं। वृक्षों की अनेक प्रजातियाँ इन वनों में पायी जाती हैं। इसलिए ये सदा हरे-भरे बने रहते हैं। यही कारण है इन वनों को सदाबहार वनों के नाम से जाना जाता है।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन :** इस प्रकार के वन पश्चिमी घाट, पूर्वी हिमालय तथा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में पाए जाते हैं। यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत लगभग 200 सेमी० है। ये इतने घने होते है कि सूर्य का प्रकाश जमीन तक नहीं पहुँच पाता हैं। वृक्षों की अनेक प्रजातियाँ इन वनों में पायी जाती हैं। इसलिए ये सदा हरे-भरे बने रहते हैं। यही कारण है इन वनों को सदाबहार वनों के नाम से जाना जाता है।

शुष्क मानसूनी वन : ये वन उत्तर-पूर्वी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दक्षिण-पश्चिमी उत्तर प्रदेश, गुजरात और देश के प्रायद्वीपीय भागों में पाए जाते हैं। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 50 से 100 सेमी० के मध्य होती है। यहाँ सामान्य वर्षा होती है।

2. **वर्षा का वितरण :**

वर्षा वितरण की दृष्टि से भारत के चार भाग हैं।

1. अधिक वर्षा के प्रदेश : इन प्रदेशों में प्रायः 200 सेमी० अधिक वर्षा होती है। इनमें असम, बंगाल और पश्चिम तटीय प्रदेश शामिल हैं। भारत में सबसे अधिक औसत वर्षा (1100 सेमी० से अधिक) मासिनराम (मेघालय) में होती है। चेरापूँजी का स्थान इसके बाद है।

2. मध्यम वर्षा का प्रदेश : इसके अन्तर्गत पश्चिमी हिमालय के दक्षिणी ढाल, बंगाल, बिहार, पूर्वी, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ तथा तमिलनाडु के पूर्वी तट आते हैं। यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 100 सेमी० से 200 सेमी० रहता है।

3. कम वर्षा वाला प्रदेश : इस प्रदेश में 50 से 100 सेमी० तक वर्षा होती है इसमें प्रायद्वीपीय भारत का आन्तरिक भाग तथा उत्तर के मैदानी क्षेत्रों के पश्चिमी भाग आते हैं।

4. विरल वर्षा वाला प्रदेश : इनके अर्न्तगत गुजरात का कच्छ प्रायद्वीप, पश्चिमी राजस्थान, दक्षिणी-पश्चिमी पंजाब, लद्दाख तथा हिमाचल प्रदेश के उत्तरी भाग सम्मिलित हैं। यहाँ वार्षिक वर्षा का औसत 50 सेमी० से भी कम रहता है।

3. वन्य जीवों के संरक्षण के लिए हमारी सरकार ने कई योजनाएँ चलाई हैं, जैसे टाइगर प्रोजेक्ट, हाथी प्रोजेक्ट तथा घड़ियाल और मगरमच्छ प्रोजेक्ट। राष्ट्रीय पशु 'बाघ' के संरक्षण के लिए भारत सरकार ने 17 राज्यों के 37,761 वर्ग किमी० क्षेत्रफल में 28 टाइगर रिजर्व स्थापित किए हैं। नेशनल पार्क वह वन क्षेत्र है जहाँ वन्य जीवों को सुरक्षित रखा जाता है। भारत में कुल 99 राष्ट्रीय पार्क हैं। भारत सरकार ने बाघों, शेरों, हिरनों तथा मोर के शिकार पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा दिया है। प्रतिवर्ष अक्टूबर माह का प्रथम सप्ताह वन्य जीव सप्ताह के रूप में मनाया जाता है जो लोगों को वन्य जीवों के प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के प्रति जागरूक करता है।

वन्य जीव हमारे राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। इनसे पर्यटन का भी विकास होता है। देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक भारतीय वन्य जीवन के दर्शन के लिए आते हैं। अतः प्रत्येक नागरिक का यह परम कर्त्तव्य है कि वह देश की इस अमूल्य निधि को भावी-पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखें।

4. **भारत की ऋतुएँ** : भारत में मुख्यतः चार ऋतुएँ होती हैं।

1. शीत ऋतु : यह ऋतु प्रायः नवंबर माह के उत्तरार्ध से आरंभ होती है तथा फरवरी में समाप्त होती है। शीत ऋतु में शीत लहर उत्तर से दक्षिण की ओर चलती है। भारत के किसी भी भाग में सूर्य की खड़ी किरणें नहीं पड़ती हैं। परिणामस्वरूप पूरे देश में कड़ाके की ठंड पड़ती है।

2. ग्रीष्म ऋतु : यह ऋतु मार्च से मई तक रहती है। इस ऋतु में सूर्य की खड़ी किरणें भारत पर पड़ती है। इससे पहाड़ी स्थानों को छोड़कर देश के अन्य भागों का तापक्रम अत्यधिक बढ़ जाता है।

उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में 'लू' कही जाने वाली गर्म और शुष्क हवाएँ चलने लगती हैं।

3. वर्षा ऋतु : जून माह के अंत में आर्द्रता से भरी पवनें अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से उठकर भूमि वाले हिस्सों की ओर बहती हैं जिन्हें मानसूनी हवाएँ कहते हैं। ये पवनें पर्वतों से टकराने के कारण वर्षा करती हैं। विशेष रूप से इन पवनों से केरल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, गुजरात और महाराष्ट्र में वर्षा होती है। वर्षा ऋतु में गुजरात और राजस्थान

सूखे प्रदेश बने रहते हैं, क्योंकि यहाँ पर मानसूनी पवनों को रोकने के लिए ऊँची पर्वत श्रेणियाँ नहीं हैं।

4. पतझड़ का मौसम : सितंबर माह में सूर्य की किरणें पुनः कर्क रेखा पर लम्बवत पड़ती हैं। अब मानसून भूभागों से बंगाल की खाड़ी की ओर लौटना प्रारंभ करता है। यह प्रक्रिया नवंबर माह के मध्य तक चलती है। लौटती हुई मानसूनी हवाएँ तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में वर्षा करती हैं। लौटते मानसून के मौसम को पतझड़ की ऋतु कहते हैं। इस समय पेड़ अपने पुराने पत्तों को नीचे गिराते हैं।

पाठ–1 : हमारा इतिहास : एक परिचय

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. इतिहास में
2. मुद्रा शास्त्र
3. सिक्के
4. ईरानियों ने
5. ये सभी

ख. रिक्त स्थान भरो–

1. को मुद्रा–शास्त्र
2. क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन
3. भूगोल
4. इंडिया
5. पुरालेख

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✓
2. ✗
3. ✗
4. ✓
5. ✓

घ. मिलान करो–

1. इतिहास का जनक
2. प्रथम चीनी इतिहासकार
3. समुद्रगुप्त
4. भारत यात्री

ङ. निम्नलिखित प्रत्येक कथन के लिए केवल एक भौगोलिक शब्द लिखिए :

1. पाण्डुलिपि
2. शिलालेख
3. खण्डहर
4. वास्तुशिल्पीय शैली
5. स्मारक

च. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. ''इतिहास से तात्पर्य अतीत का अध्ययन या अन्वेषण है। ''वह एकमात्र ऐसा इतिहासकार था जिसने वैज्ञानिक तरीके पर आधाारित इतिहास को लिखने का प्रयास किया।
2. इस काल मे लोगों को ऐसे स्थान पर रहना पसंद था। जहाँ भोजन का संग्रह आसानी से हो सके तथा जलवायु भी उनके रहने योग्य हो। इसलिए वे लोग नदी के तट पर निवास करते थे।
3. ई०पू० से तात्पर्य उन ऐतिहासिक घटनाओं की तिथियाँ है जो ईसामसीह के जन्म के पूर्व घटी जबकि ई० उन घटनाओं के

साथ प्रयुक्त किया जाता है जो ईसा मसीह के जन्म के बाद घटी।

4. शिलालेख का अध्ययन पूरालेख-शास्त्र कहलाता है। चटटानों स्तम्भो, गुफाभित्तियों, किलो, महलों की दीवारों तथा मिट्टी और ताँबे की प्लेटों पर उत्कीर्ण लेखों को अभिलेख कहते हैं।

5. अतीत मे जाना सहज नहीं है। फिर भी कुछ स्त्रोत ऐसे होते है जो हमें इतिहास की जानकारी प्रदान करने मे सहायक होते हैं। इन स्त्रोतों को ऐतिहासिक स्त्रोत कहते हैं-

   1. पुरातात्विक स्त्रोत 2. पुरातत्व विज्ञान।

छ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. हम सभी अपने पूर्वजों (आदिमानव) के बारे में जानना चाहते हैं; जैसे- वे कैसे रहते थे, उनका भोजन कैसा था, वे कैसे वस्त्र पहनते थे आदि। अर्थात् एक आदिमानव एक सभ्य मानव कब और कैसे बना? हमें जानना चाहिए कि इतिहास क्या है। इतिहास हमारे अतीत का क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन है। यह पुरातनकाल के लोगों की संरचना और क्रियाकलापों का लेखा-जोखा सँजोए रखता है। अतीत की गतिविधियों का अध्ययन करने वाले विद्वान इतिहासकार कहलाते हैं। हेरोडोटस को इतिहास का जनक कहा जाता है।

   हेरोडोटस के अनुसार – ''इतिहास से तात्पर्य अतीत का अध्ययन या अन्वेषण है।'' वह एकमात्र ऐसा इतिहासकार था जिसने वैज्ञानिक तरीके पर आधारित इतिहास को लिखने का प्रयास किया।

2. इस काल में लोगों को ऐसे स्थान पर रहना पसंद था। जहाँ भोजन का संग्रह आसानी से हो सके तथा जलवायु भी उनके रहने योग्य हो। इसलिए वे लोग नदी के तट पर निवास करते थे क्योंकि वहाँ मानव को जल स्त्रोतों की उपस्थिति आकर्षित करती थी। इसके पूर्व मानव ने वनों में रहना प्रारंभ कर दिया वहाँ वे इन्हीं वनों से फल व अन्य उत्पादों को एकत्रित करते थे तथा जानवरों का शिकार करते थे, इनका मुख्य भोजन जंगली जानवरों का कच्चा मांस था ।

3. नवपाषाण काल में मनुष्य का स्मरणीय आविष्कार पहिये का आविष्कार था, जिसने मानव-जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। अनुमान है कि प्रारम्भिक मानव ने लकड़ी के कुछ गोल लट्ठों को लुड़कते देखा होगा। पहिये का द्वितीय उपयोग गाड़ी को खीचने के लिए किया गया। पहियेदार गाड़ी ने बोझा ढोने तथा सवारी करने का काम आसान कर दिया।

4. लिखित दस्तावेजों के रूप में प्राचीन इतिहास के अभिलेखों में से एक को पाण्डुलिपि कहा जाता है। ताड़ के पत्ते, बर्च की छाल तथा कागज से प्राचीनकाल में पांडुलिपियाँ तैयार की जाती थीं। दुर्भाग्य से अनेक पांडुलिपियाँ चूहों और कीटों द्वारा खा ली जाती थी या नष्ट कर दी जाती थीं परन्तु कुछ पांडुलिपियाँ मंदिरों और बौद्ध मठों में सुरक्षित पाई गई हैं।

5. हमारे जीवन में इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुरातन काल की जानकारी प्राप्त करने में सहायक है। इतिहास की सहायता से हम अपने पूर्वजों के बारे में जान सकते हैं। यह हमें पूर्वजों के अनुभवों का विवरण देता है। यह हमें यह भी बताता है कि हमारे पूर्वज किस प्रकार रहते थे। इसका अध्ययन हमें एक बेहतर नई दुनिया और संपूर्ण मानव जाति के विकास एवं एक-दूसरे की भावनाओं के बारे में बताता है।

ज. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **इतिहास के स्त्रोतः** अतीत में जाना सहज नहीं है, फिर भी कुछ स्त्रोत ऐसे होते है जो हमें इतिहास की जानकारी प्रदान करने में सहायक होते हैं। इन स्त्रोतों को ऐतिहासिक स्त्रोत कहते हैं। ऐतिहासिक स्त्रोत दो प्रकार के होते हैं -

   पुरातात्विक स्त्रोत - पुरातात्विक स्त्रोत की सहायता से हम इतिहास के बारे में जान सकते हैं।

   पुरातत्व विज्ञान - प्राचीन मानव सभ्यता को प्रकाश में लाने में पुरातत्व विभाग का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतीत काल में लोग अपने पीछे कुछ चिन्ह छोड़ गए हैं, इन्हें हम अवशेष कहते हैं। पुरातात्विक अवशेष इतिहास के बहुमूल्य स्त्रोत माने जाते हैं। इन स्त्रोतों में विभिन्न प्रकार के औजार एवं उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ घरों के खण्डहर, आभूषण, मूर्तियाँ तथा सिक्के आदि प्रमुख होते हैं।

2. **भारत का भौगोलिक ढाँचा :** इतिहास और भूगोल का घनिष्ठ संबंध है। भौगोलिक परिस्थितियों के अंतर्गत भौगोलिक स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति आदि बातें हैं। ये किसी देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक इतिहास को प्रभावित करती हैं। भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए देश के भौगोलिक प्रदेशों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।

   1. उत्तर का पर्वतीय प्रदेश : भारत का उत्तरीय पर्वतीय प्रदेश हिमालय की पर्वत श्रेणियों से घिरा है। हिमालय पर्वत उत्तर में एक अभेद्य दीवार की भाँति खड़ा हुआ है। पश्चिमोत्तर में कुछ दर्रे स्थित हैं, जिनसे होकर ईरानी, यूनानी, कुषाण, शक, सिक्किम, मंगोल, तातार, तुर्क और मुगल आक्रमणकारी भारत में आए और इन्होंने अपने राज्यों की स्थापना की।

2. उत्तर का विशाल मैदान : उत्तर भारत का विशाल मैदान सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदियों की लाई गई उपजाऊ मिट्टी से बना है। सिंधु की घाटी में ही आज से लगभग 4,500 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता विकसित हुई थी। इसके बाद सिंधु-गंगा के मैदान में वैदिक सभ्यता फली-फूली। इस प्रदेश को 'आर्यावर्त' कहा जाता था।

3. दक्षिण का पठार : दक्षिण भारत में विंध्याचल पर्वत से लेकर सुदूर दक्षिण तक दक्कन का पठार फैला हुआ है पठारी तथा दुर्गम भागों के कारण यहाँ पर मराठे जैसी वीर जाति फली-फूली और द्रविड़ संस्कृति ने इस प्रदेश को अलोकित किया।

4. तटीय प्रदेश : तटीय प्रदेश की समुद्र से निकटता के कारण अनेक व्यापारिक बंदरगाहों तथा समृद्ध नगरों का विकास हुआ। दक्षिण के राज्यों ने इन्हीं बंदरगाहों से जावा, सुमात्रा, म्यांमार (बर्मा), स्याम (थाईलैंड) तथा इंडो-चीन के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए।

3. **यात्रियों के विवरण** : समय-समय पर विभिन्न शासकों के शासन काल में आने वाले विदेशी यात्री अपनी यात्राओं के विवरणों को लिपिबद्ध करते रहे हैं। हेरोडोटस ने 5वीं शताब्दी में भारत का भ्रमण किया तथा अपनी खोजों का वर्णन अपने द्वारा रचित पुस्तक 'इंडिया' में किया। नियाकुश, एरिस्टोबुलस तथा एन्सेक्रिटस ने सिकन्दर महान के भारत पर आक्रमण के समय भारत का भ्रमण किया तथा उसके आक्रमण का वर्णन किया। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय मेगस्थनीज, एक यूनानी यात्री भारत आया जिसने अपनी पुस्तक 'इंडिका' में उसके प्रशासन का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है।

सुभासिन, एक चीनी इतिहासकार प्रथम शताब्दी में सर्वप्रथम भारत यात्रा पर निकला तथा अपनी यात्रा का वर्णन किया। कुछ अन्य चीनी यात्रियों जैसे फाह्यान हर्ष के शासन के समय और ह्वेनत्सांग तथा इत्सिंग ने भारत की यात्रा की। इन सभी यात्रियों ने बौद्ध धर्म का अध्ययन किया तथा अपने वर्णन में तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दशाओं का वर्णन किया।

पाठ-2 : आदिमानव

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. पत्थर से
2. कुत्ता
3. गुफा में
4. पुरा पाषाण काल में

ख. रिक्त स्थान भरो-

1. पूरा पाषाण काल
2. नव पाषाण काल
3. भोजन के
4. कोलडीहवा की बस्तियों
5. प्रकृति

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✗
3. ✗
4. ✗
5. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. विद्वानों का मत है कि सर्वप्रथम मानव ने अफ्रीका की धरती पर अपने कदम रखे थे। वहीं से आदिमानव एशिया और यूरोप महाद्वीपों मे फैलता गया। आदिमानव प्रारम्भ मे पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर था।
2. मानव की उत्पत्ति कब और कहाँ हुई? ये सभी प्रश्न आज भी विज्ञान के सामने ज्यों-कें-त्यों बने हुए हैं। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि आज से लगभग पाचँ या दस लाख वर्ष पहले नर-वानर जैसे ही एक प्राणी का जन्म हुआ, जिसकी आकृति मानव से काफी मिलती जुलती है।
3. प्राचीन काल मे पहिए का द्वितीय उपयोग गाडी को खीचने के लिये किया गया। पहियेदार गाडी ने बोझा ढोने तथा सवारी करने का काम आसान कर दिया। इससे मनुष्य अधिक दूर तक परिवहन कर सकता था।
4. पाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है पहला पुरापाषाण काल दूसरा मध्यपाषाण काल तीसरा नव पाषाण काल। पाषाण का मतलब होता है पत्थर। इससे प्रस्तर युग भी कहते हैं।
5. धार्मिक विश्वास-नवपाषाण काल मे मनुष्य का धार्मिक जीवन विकसित होने लगा था। वह जल, सूर्य, वायु, चन्द्र तथा तारों को आलौकिक शक्ति मानकर उनकी पूजा करने लगा था। इस काल मे जादू-टोना तथा धार्मिक कर्मकाण्डों की मान्यता थी। मातृदेवी उनकी प्रमुख देवी थी।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. जंगली जानवरों से बचने के लिए आदिमानव ने पत्थर तथा लकड़ी के नुकीले औजारों का निर्माण किया। आदिमानव डरावने जंगली जानवरों की तुलना में दुर्बल था। वह उनसे डरता था; अतः वह समूहों में रहता था। उसने सर्वप्रथम अपने शत्रुओं से

रक्षा के लिए कुछ हथियार बनाये। ये हथियार और औजार उसे भोजन-प्राप्ति में भी सहायता देते थे। आरंभ में उसने लकड़ी के टुकड़ों, पेड़ की टहनियों तथा पत्थरों जैसी प्राकृतिक वस्तुओं को हथियार के रूप में प्रयुक्त किया। बाद में उसने फ्लिन्ट नामक कठोर पत्थर को घिसकर नुकीले सिरों वाले कुछ औजार तथा हथियार बनाये जो कुल्हाड़ी, भाले, चाकू तथा हथौड़े आदि जैसे आकार के थे।

2. **आग की खोज** - पुरापाषाण काल के अन्त में मानव ने आग की खोज की, जिसने उसके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित किये। आग की खोज दो पत्थरों के रगड़ने से उत्पन्न चिंगारी के रूप में हुई होगी। मानव ने आग का प्रयोग शीत ऋतु में स्वयं को गर्म रखने, अँधेरी गुफाओं में प्रकाश करने तथा वन्य जीवों को डराने के लिए एवं मांस भूनने के लिए आरम्भ किया। भुना हुआ मांस स्वादिष्ट तथा अधिक पौष्टिक होता था।

3. नवपाषाण काल में मनुष्य का स्मरणीय आविष्कार पहिये का आविष्कार था, जिसने मानव-जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। अनुमान है कि प्रारम्भिक मानव ने लकड़ी के कुछ गोल लट्ठों को लुड़कते देखा होगा। पहिये का द्वितीय उपयोग गाड़ी को खीचने के लिए किया गया। पहियेदार गाड़ी ने बोझा ढोने तथा सवारी करने का काम आसान कर दिया।

4. जंगली जानवरों से बचने के लिए आदिमानव ने पत्थर तथा लकड़ी के नुकीले औजारों का निर्माण किया। आदिमानव डरावने जंगली जानवरों की तुलना में दुर्बल था। वह उनसे डरता था; अत: वह समूहों में रहता था। उसने सर्वप्रथम अपने शत्रुओं से रक्षा के लिए कुछ हथियार बनाये। ये हथियार और औजार उसे भोजन-प्राप्ति में भी सहायता देते थे। आरंभ में उसने लकड़ी के टुकड़ों, पेड़ की टहनियों तथा पत्थरों जैसी प्राकृतिक वस्तुओं को हथियार के रूप में प्रयुक्त किया।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **मध्यपाषाण काल** - मध्यपाषाण काल को माइक्रोलिप या सूक्ष्मपाषाण काल भी कहा जाता है इसका प्रारम्भ 10,000 - 8,000 ई०पू० भी कहा जाता है। यह काल पुरापाषाण काल के मध्य संक्रमण का काल था। इस काल में मानव के हथियारों तथा औजारों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। वे हथियार बनाने के लिए हड्डियों व हाथी दाँत आदि का प्रयोग करने लगे। पत्थर से निर्मित छोटे-छोटे हथियार जो मनुष्य द्वारा बनाए जाते थे। इस काल में उनमें महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस काल

को मध्यपाषाण काल भी कहा जाता है। इस काल के मानव-जीवन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं –

कला – मध्यपाषाण काल में मानव ने चित्रकला के क्षेत्र में बहुत उन्नति की। गुफाओं के अन्दर औजार तथा हथियारों पर वह चित्रकारी करने लगा था, जो कि स्पेन की गुफाओं से मिला रंगीन भैंसे का चित्र आज के चित्रकारों को भी आश्चर्यचकित कर देता है तथा चट्टानों पर बनाई गई चित्रकारियों में मुख्य रूप से लाल और सफेद रंगों को भरा गया है, इन चित्रकारियों का विषय शिकार करना, मछली पकड़ना तथा धार्मिक विश्वास आदि है।

2. **पहिये की खोज** – नवपाषाण काल में मनुष्य का स्मरणीय आविष्कार पहिये का आविष्कार था, जिसने मानव-जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। अनुमान है कि प्रारम्भिक मानव ने लकड़ी के कुछ गोल लट्ठों को लुड़कते देखा होगा। पहिये का द्वितीय उपयोग गाड़ी को खीचने के लिए किया गया। पहियेदार गाड़ी ने बोझा ढोने तथा सवारी करने का काम आसान कर दिया। इससे मनुष्य अधिक दूर तक परिवहन कर सकता था। इसके अतिरिक्त इससे बर्तन बनाने में भी कुम्हार के चाक का उपयोग सम्भव था। इस प्रकार पहिये का आविष्कार मानव सभ्यता के विकास का प्रथम चरण बना।

3. नवपाषाण काल की अवधि 10,000 – 4,000 ई०पू० तक स्वीकार की है। मानवीय ज्ञान तथा खोजों ने इतिहास में जिस नए काल का आरम्भ हुआ, उसे ही नवपाषाण काल से पृथक करती है। नव पाषाण काल ने मानव-जीवन में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिए और वह बड़ी तेजी के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने लगा। इस काल के मानव जीवन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

कृषि का प्रारम्भ – प्रारम्भ में मनुष्य कुछ स्थानों पर जंगली रूप में उगने वाले खादयान्नों की फसल ही काटता था। उसे ज्ञान ही नहीं था कि अनाज को बोया जा सकता है। संभवत: एक दिन किसी व्यक्ति ने देखा कि अनाज का दाना छिटककर गोबर के ढेर में पहुँच गया तथा कुछ समय बाद वह सुनहरे अन्न के रूप में विकसित हो गया। यही कृषि का प्रारम्भ था।

4. **पशुपालन** – पशुओं को पालने की शुरुआत कैसे हुई? कृषि करने के साथ ही मानव पशुओं के महत्व को समझ गया था। अब उसने उपयोगी पशुओं को भी पालना प्रारम्भ कर दिया था। मनुष्य कुत्ता, भेड़, बकरी, गाय तथा घोड़ा आदि पशुओं को पालने लगा। पशुओं से मनुष्य को भोजन तथा दूध आदि की

प्राप्ति होने लगी। बैलों का प्रयोग हल चलाने में किया जाने लगा। मनुष्य का पहला पालतू पशु कुत्ता था। कुछ समय के बाद मनुष्य ने सवारी और बोझा ढोने के उद्देश्य से खच्चरों, गधों, घोड़ों तथा ऊँटों को पालना शुरू कर दिया। इस प्रकार पशु-पालन ने मानव के आर्थिक जीवन में एक और महत्वपूर्ण कड़ी को जोड़ दिया।

पाठ-3 : वैदिक समाज एवं संस्कृति

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. ऋग्वेद
2. देवी-देवताओं की मूर्तियों की
3. पाँच
4. अग्निदेव के रूप में
5. ये सभी

ख. रिक्त स्थान भरो-

1. मनमौजी
2. वयोवृद्ध (कुलाप)
3. वैदिक काल
4. सेनापति
5. प्रचलित

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✗
3. ✗
4. ✓
5. ✓

घ. प्रमुख धातुओं से बनने वाली वस्तुओं के नाम लिखिए -

1. चाकू, कुल्हाड़ी, लोहे की सुई
2. अगूठियाँ, चूडिया, सीसे की सुइयाँ
3. हडें सिंहासन, मूर्तियाँ, वाधयंत्र, लोटे, घंटे
4. कास्य के बर्तन

ङ. मिलान करो-

1. धार्मिक ग्रंथ
2. राजनीतिक संगठन
3. लोहा
4. ज्यामिति

च. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल उत्तर भारत के इतिहास मे शहरी सिंधु घाटी सभ्यता के अंत मे 1500 ईसा पूर्व-1000 ईसा पूर्व के बीच की अवधि है।

2. चारो वेदों के नाम है-

1. ऋग्वेद 2. सामवेद

3. यजुर्वेद 4. अधर्ववेद

3. आर्य किसी जाति का नही बल्कि एक विशेष विचारधारा को मानने वाले का समूह था जिसमे श्वेत, पित, रक्त, श्याम और अश्वेत रंग के सभी लोग शामिल थे।

4. आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि और पशुपालन था। अर्ध-खानाबदोश देहाती लोग आर्यो के रुप मे जाने जाते थे।

5. धर्म-शास्त्रों मे वर्ण व्यवस्था समाज को चार वर्णो (ब्राहम्ण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) मे विभाजित करती है।

6. उन्होंने मानव जीवन की प्रत्याशित आयु 100 वर्ष मानकर पहले 25 वर्ष की अवधि गुरुकुल जाकर वहाँ के विद्वान पंडितों से जीवन तथा धर्म के विविध चरण को ब्रह्मचर्य आश्रम कहते हैं।

छ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. प्राचीन वैदिक काल (ऋग्वेद का काल) तथा उत्तर वैदिक काल (अन्य वेदों का काल) वैदिक संस्कृति के जन्मदाता आर्य थे।

   प्राचीन आर्य सबसे पहले सिंधु नदी के तट पर बस गए तथा उन्होंने 'सिंधु घाटी' का विकास किया।

   बाद में उन्होंने दस्यु तथा दास (जो आर्य नहीं थे) जाति के लोगों को भारत के पूर्वी तथा उत्तरी क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए भेजा। इसके पश्चात् वे दक्षिण तथा पूरब की ओर से विंध्याचल पर्वत शृंखला (मध्य भारत) तक फैल गए। आर्य जिस क्षेत्र में आकर बसे, उसे 'सप्त-सिंधु' कहकर पुकारते थे।

2. आर्य लोग सूती तथा ऊनी वस्त्र पहनते थे। स्त्रियाँ ढीली साड़ियाँ तथा पुरुष धोती और सिर पर पगड़ी बाँधते थे। निर्धन लोग साधारण वस्त्र धारण करते थे। लोगों के मनोरंजन में नृत्य, गाना, दौड़ना जुआ खेलना आदि प्रमुख क्रियाकलाप थे अध्यापक प्रारम्भिक शिक्षा घरों पर या आश्रमों में देते थे, जिन्हें गुरुकुल कहा जाता था। स्त्रियों को घर से बाहर जाकर शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी। वे घर पर ही शिक्षा ग्रहण करती थीं।

3. समाज में स्त्रियों की दशा संतोषजनक नहीं थी। ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा इस काल में स्त्रियों के सम्मान में कमी आ गई थी। उच्च वर्ग के लोगों में बहु-विवाह प्रथा प्रचलित थी। समाज में विधवा विवाह प्रथा भी प्रचलित थी।

4. राजा अपने राज्य का प्रमुख सेनापति होता था। वह राज्य का

प्रमुख न्यायकर्त्ता भी था। वह अपनी प्रजा के हितों का ध्यान रखता था। वह महाराजाधिराज पदवी का प्रयोग करता था। विभिन्न राज्यों का विस्तार धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था तथा एक निश्चित क्षेत्र के लिए 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा था। युद्ध क्षेत्र के लिए धनुष-बाण, तलवार, भाले, गदाएँ आदि आर्यों के प्रमुख हथियार थे। युद्ध क्षेत्र के नियम निश्चित थे।

5. वैदिक आर्यों का आर्थिक जीवन कृषि पर केंद्रित था। वे कला, शिल्प, व्यापार तथा वाणिज्य से भी आजीविका प्राप्त करते थे। आर्य यद्यपि मूलतः पशुपालक थे फिर भी उन्होंने कृषि को अपनाया। बैलों एवं साँड़ों को खेती करने एवं गाड़ियाँ खींचने तथा स्थानांतरण एवं प्रसार के लिए उपयोग किया जाता था एवं पशुओं में गाय को सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पवित्र स्थान दिया जाता था तथा वे कृषि में गेहूँ, जौ, चावल, तिलहन, कपास सब्जी आदि उगाते थे।

ज. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. ईसा से लगभग 1,500 वर्ष पूर्व से लेकर 600 वर्ष पूर्व की अवधि को वैदिक युग के रूप में जाना जाता है। 3,500 वर्ष पूर्व सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद की रचना हुई। अन्य तीन वेद-सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद की रचना इसके बाद हुई अतः वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- प्राचीन वैदिक काल (ऋग्वेद का काल) तथा उत्तर वैदिक काल (अन्य वेदों का काल) वैदिक संस्कृति के जन्मदाता आर्य थे। प्राचीन आर्य सबसे पहले सिंधु नदी के तट पर बस गए तथा उन्होंने 'सिंधु घाटी' का विकास किया।

   बाद में उन्होंने दस्यु तथा दास (जो आर्य नहीं थे) जाति के लोगों को भारत के पूर्वी तथा उत्तरी क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए भेजा। इसके पश्चात् वे दक्षिण तथा पूरब की ओर से विंध्याचल पर्वत शृंखला (मध्य भारत) तक फैल गए। आर्य जिस क्षेत्र में आकर बसे, उसे 'सप्त-सिंधु' कहकर पुकारते थे। इसके अंतर्गत पंजाब की पाँच नदियों का क्षेत्र (सतलुज, व्यास, रावी, चेनाब, झेलम तथा मुख्यत नदियाँ सिंधु तथा सरस्वती) था। भारत शब्द पर्शिया के शिलालेखों द्वारा 'सिंधु तथा हिंदू' नामक शब्दों से भी लिया गया है। आर्यों के देश को 'आर्यवर्त' भी कहा जाता था।

2. **पूर्व वैदिक काल :** ऋग्वेद प्रथम वेद था, जिसकी रचना की गई थी। अतः ऋग्वैदिक काल को पूर्व वैदिक काल भी कहा जाता है। आधुनिक भारतीय सभ्यता और संस्कृति ऋग्वैदिक कालीन सभ्यता और संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित हुई है।

ऋग्वेद में एक हजार से भी अधिक श्लोक हैं, जिन्हें सूक्ति या अमृतवाणी भी कहते हैं। ये श्लोक विभिन्न देवी-देवताओं की प्रशंसा में गाए गए हैं। तीन मुख्य देवता-अग्नि देवता, इंद्र देवता तथा सोम देवता क्रमशः अग्नि आग के देवता, इंद्र - युद्ध के देवता तथा सोम थे। एक पौधा था जिससे एक विशिष्ट खाद्य पदार्थ तैयार किया जाता था।

राजनैतिक जीवन : प्रारम्भ में बहुत छोटे-छोटे राज्यों पर राजा राज्य करते थे। इन्हें जन कहा जाता था। इनका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। उनमें से कुछ थे, यदु, भरत, पुरु आदि जिनका नाम हम अन्य पुस्तकों में भी पाते हैं। ऐसा विश्वास है कि ऋग्वेद के काल में भरत राजा के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारत पड़ा। ऋग्वेद काल में ये पाँच कबीलों में विभक्त थे, जिन्हें पंचजन कहा जाता था। अनेक परिवारों को मिलाकर एक कुनबा बनता था, जिसे 'विश' कहा जाता था। अनेक 'विश' मिलकर एक 'जन' बनता था। जन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' होती थी, जिसका मुखिया ग्रामणी कहलाता था।

कबीले का मुखिया 'राजन' कहलाता था।

पुरोहित, सेनानी और ग्रामिणी राजा की सहायता किया करते थे। पुरोहित या पुजारी को विशेष अधिकार दिया गया था क्योंकि वह राजा का सलाहकार, उपदेशक (गुरु), ऋषि और मित्र था। वह युद्ध में राजा के साथ जाता था तथा देश की रक्षा तथा युद्ध में विजय के लिए जिम्मेदार था।

लडाईयाँ, आत्मरक्षा, जमीन हथियाने, जल, प्रजा और विजय के लिए लड़ी जाती थी। राजा का चुनाव कुलजनों या वंश से किया जाता था।

आर्थिक जीवन : वैदिक आर्यों का आर्थिक जीवन कृषि पर केंद्रित था। वे कला, शिल्प, व्यापार तथा वाणिज्य से भी आजीविका प्राप्त करते थे। आर्य यद्यपि मूलतः पशुपालक थे फिर भी उन्होंने कृषि को अपनाया। बैलों एवं साँड़ों को खेती करने एवं गाड़ियाँ खींचने तथा स्थानांतरण एवं प्रसार के लिए उपयोग किया जाता था एवं पशुओं में गाय को सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पवित्र स्थान दिया जाता था तथा वे कृषि में गेहूँ, जौ, चावल, तिलहन, कपास सब्जी आदि उगाते थे।

3. **उत्तरवैदिक काल :** वैदिक समाज के कबीले की संरचना समाप्त होती जा रही थी। आर्यों के निवास क्षेत्र अब सत्ताधारी कबीले के नाम से जाने जाते थे। कांबोज, कुरु, पांचाल, काशी, कौशल, विदेह, मगध, अंग आदि ऐसे ही राज्य थे। इन्हें जनपद की संज्ञा दी गई थी। राजनीतिक जीवन अधिक तीव्र हो गया

विभिन्न राज्यों में श्रेष्ठता के लिए बार-बार संघर्ष होने लगे, यह काल 'उत्तरवैदिक काल' कहलाता है।

धर्म : पूर्ववैदिक काल के देवताओं- इंद्र, वरुण और अग्नि की महत्ता कम हो गई थी तथा इनका स्थान ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ने ले लिया। उत्तरवैदिक काल में ही हिंदू-धर्म का स्वरूप निश्चित होने लगा था। उत्तरवैदिक काल में कर्म तथा मोक्ष में भी लोगों का विश्वास बढ़ गया था। लोगों को यह विश्वास था कि बलि आदि संस्कारों से मनुष्य को पुनर्जन्म से मुक्ति मिलती है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

4. **जीवन के चार आश्रम या वर्ण :** आर्यों ने अपने जीवन की एक अनुशासन संहिता या आचार संहित बनाई थी, जोकि बहुत कठोर थी। यह संहिता या व्यवस्था चार आश्रमों में बाँटी गई थी। उन्होंने मानव जीवन की प्रत्याशित आयु 100 वर्ष मानकर पहले 25 वर्ष की अवधि गुरुकुल जाकर वहाँ के विद्वान पंडितों से जीवन तथा धर्म के विविध चरण को ब्रह्मचर्य आश्रम कहते थे।

दूसरी अवस्था का चरण गृहस्थाश्रम का था। यह अवस्था व्यक्ति के विवाह करने और एक परिवार बनाने से आरम्भ होती थी। वानप्रस्थ आश्रम जीवन की तीसरी अवस्था थी। यह पचास वर्ष की आयु से प्रारम्भ होती थी। इसके बाद वाली अवस्था सन्यास या जन-सेवा और उपदेश देने तथा पूर्ण त्याग की अवस्था थी।

पाठ-4 : चालुक्य एवं पल्लव

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. पट्टदकल
2. नरसिंहवर्मन प्रथम ने
3. नरसिंहवर्मन प्रथम

ख. रिक्त स्थान भरो-

1. काँची
2. नरसिंहवर्मन प्रथम
3. सिंहविषणु
4. पुलकेशियन द्वितीय

ग. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. चालुक्य (550-757 ई0) : जिस समय हर्षवर्धन का उत्तर भारत में शासन था उस समय चालुक्यों ने उत्तरी दकन में अपने शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की थी। सातवाहनों के पतन के बाद कई राज्य दकन के अस्तित्व में आए।
2. 550 ई० में 'पुलकेशियन' प्रथम के काल में चालुक्य एक प्रभुत्ता संपन्न शक्ति बन गए। उन्होंने वातापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।

3. पल्लवों ने अपना प्रभुत्व आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के कुछ भागों पर स्थापित किया। उनकी राजधानी काँची ही बनी रही। पल्लव वंश छठी शताब्दी में चेर, चोल और पांडव को परास्त कर अस्तित्व में आया। नरसिंहवर्मन प्रथम, महेन्द्रवर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी एक प्रसिद्ध पल्लव नरेश था। जिसने पुलकेशिन द्वितीय को हराकर वातापी पर नियंत्रण कर लिया। उसने 'महामल्ल' की उपाधि ग्रहण की। उसने सिंहल, चोल, केरल पुत्र तथा पांडवों को भी हराया।

4. पल्लव शासन कला तथा मूर्तिकला के संरक्षक थे। नरसिंहवर्मन प्रथम ने चेन्नई के निकट मामल्लपुरम (महाबलिपुरम्) में शिलाओं तथा चट्टानों को काटकर बनाए गए भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया। जिन्हें 'रथ-मंदिर' कहा जाता है। ये मंदिर रथ की आकृति के है काँची में भी अनेक मंदिर बनवाए गए।

घ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. चालुक्य नरेश कला के संरक्षक थे। वातापी, ऐहोल तथा पट्टदकल में अनेक विष्णु तथा शिव मंदिर बनाए गए। इसमें अकेले पट्टदकल में ही 70 मंदिर हैं। इनमें 'पापनाथ' तथा 'विरूपाक्ष मंदिर' सबसे प्रसिद्ध है। वातापी में विष्णु का एक गुफा मंदिर भी हाल ही में खोजा गया है। ऐहोल को 'भारतीय मन्दिरों की स्थापत्य कला का पालन' कहा गया है। यही नहीं, अजंता की गुफाओं के अधिकांश भित्तिचित्र भी चालुक्यों के शासनकाल में ही बनाए गए।

2. पल्लव शासन कला तथा मूर्तिकला के संरक्षक थे। नरसिंहवर्मन प्रथम ने चेन्नई के निकट मामल्लपुरम (महाबलिपुरम्) में शिलाओं तथा चट्टानों को काटकर बनाए गए भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया। जिन्हें 'रथ-मंदिर' कहा जाता है। ये मंदिर रथ की आकृति के है काँची में भी अनेक मंदिर बनवाए गए। इन मंदिरों के शिखर बहुत ऊँचे होते थे। काँची का कैलाशनाथ मंदिर अपनी सुंदर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। महाबलिपुरम् का तट मंदिर, काँची में मुक्तेश्वर एवं मातगेश्वर के मंदिर तथा गुडिमल्लम का परशुरामेश्वर मंदिर भिन्न-भिन्न शैलियों में निर्मित है।

3. पल्लवों ने अपना प्रभुत्व आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के कुछ भागों पर स्थापित किया। उनकी राजधानी काँची ही बनी रही। पल्लव वंश छठी शताब्दी में चेर, चोल और पांडव को परास्त कर अस्तित्व में आया। नरसिंहवर्मन प्रथम, महेन्द्रवर्मन का पुत्र एवं उत्तराधिकारी एक प्रसिद्ध पल्लव नरेश था। जिसने पुलकेशिन द्वितीय को हराकर वातापी पर नियंत्रण कर लिया।

उसने 'महामल्ल' की उपाधि ग्रहण की। उसने सिंहल, चोल, केरल पुत्र तथा पांडवों को भी हराया।

पल्लव वंश का अंतिम शासक 'अपराजित' चोल राजाओं द्वारा पराजित हुआ। उसके पतन के साथ ही पल्लव वंश समाप्त हो गया। पल्लवों के शासनकाल की दशाएँ : विद्वानों तथा कलाकारों को पल्लव नरेश ने संरक्षण प्रदान किया। उन्होंने तमिल संस्कृति को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। महेन्द्रवर्मन स्वयं एक कवि तथा नाटककार था। वह जैन धर्म का अनुयायी था, जिसे अपार नामक तमिल संत ने शैव धर्म में प्रविष्ट कराया। पल्लवों के अधीन काँची, संस्कृत तथा तमिल भाषा के अध्ययन का महत्वपूर्ण केन्द्र था।

पाठ-5 : जनपदों और महाजनपदों का युग

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 16
2. वैशाली
3. गिरिव्रज

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. कुशीनगर
2. मनेर
3. तक्षशिला
4. अजातशत्रु
5. हस्तिनापुर
6. मथुरा

ग. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. लगभग 600 ई०पू० मे महाजनपदों का विकास हुआ इस समय वैदिक काल के जन का स्वरुप बदल गया और ये जनपद से महाजनपद बन गये।
2. कुछ जनपदों के क्षेत्र बडे थे। साथ ही दूसरे जनपदों की तुलना मे ज्यादा शक्तिशाली भी थे। यही जनपद महाजनपद कहलाए। 600 ई०पू० मे 16 महाजनपद थे।
3. वत्स के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश का इलाहाबाद जिला सम्मिलित था इसकी राजधानी कौशांबी थी।
4. महाजनपदों का कुछ जनों (समूह) ने विकास किया, फलस्वरुप महाजनपदों का स्वरुप प्राप्त कर लिया।

घ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. गणतंत्र : पालि साहित्य के अनुसार बुद्ध के समय में उत्तरी भारत में लगभग दस गणतंत्र थे। जिसमें कपिलवस्तु, वैशाली, पावा, मल्ल, कुशीनगर आदि महत्वपूर्ण थे। इन गणतंत्रों का

प्रशासनिक मुखिया राजा कहलाता था, जिसे स्वयं जनता चुनती थी, अतः वह जनता के प्रति उत्तरदायी होता था सभाओं के सदस्य भी जनता द्वारा चुने जाते थे।

2. मगध में दो बहुत ही शक्तिशाली शासक बिंबसार तथा अजातशत्रु हुए। अन्य जनपदों को जीतने के लिए ये हर संभव साधन अपनाते थे। बिंबसार ने एक मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की। उसके अधिकार में 80,000 गाँव थे, प्रत्येक गाँव की पृथक् सभा होती थी। जिसका मुखिया 'ग्रामिक' होता था। उसने व्यापार तथा उद्योग को प्रोत्साहित किया। बिहार में राजगृह (आधुनिक राजगीर) कई सालों तक मगध की राजधानी बनी रही। बाद में पाटलिपुत्र (पटना) को राजधानी बनाया गया।

3. जनपद (जिला) कई तहसीलों से मिलकर बना है। कई जनपदों से मिलकर आपका प्रदेश बना है। इसी प्रकार प्राचीन काल में छोटे-छोटे जनपद मिलकर महाजनपद बन गए।

अंग : पालि साहित्य के अनुसार अंग महाजनपद में आधुनिक बिहार के भागलपुर तथा मुँगेर जिले सम्मिलित थे इसकी राजधानी चंपा थी।

मगध : मगध में बिहार के पटना तथा गया जिले सम्मिलित थे इसकी राजधानी गिरिव्रज थी।

4. महाजनपदों से सरकार प्रणाली उन दिनों दो प्रकार की सरकार प्रणालियाँ थीं-राजतंत्र और गणतंत्र।

राजतंत्र : यह वंशानुगत होती थी। इसमें पिता से पुत्र को सत्ता प्राप्त होती थी। सरकार में राजा का पद बहुत महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली होता था। उसे समाज व धर्म का संरक्षक तथा देवता की भाँति माना जाता था। वह विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करता था। इसके अतिरिक्त मंत्री जो 'अमात्य' कहलाते थे, की एक परिषद् होती थी।

ङ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. राजनैतिक क्षेत्र से ज्यादा सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव सांस्कृतिक क्षेत्र में पड़ा जैसे -

☞ सिकन्दर ने भारत पर 326 ई० पू० में आक्रमण किया था। सिकन्दर के भारतीय आक्रमण के विवरण से भारतीय इतिहास की तिथि निर्धारण में सहायता मिलती है।

☞ सिकन्दर के आक्रमण ने भारत के द्वार यूनानी सम्पर्क और प्रभावों के लिये खोल दिये।

☞ इस घटना के बाद विदेशों से घनिष्ठ व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित हुए।

☞ भारतीय शिल्पकला और ज्योतिष विज्ञान के क्षेत्र पर यूनानी लेखकों का गहरा प्रभाव पड़ा।

☞ भारतीय सिक्कों पर यूनानी सिक्कों की निर्माण शैली का प्रभाव दिखाई देता है।

2. तक्षशिला के राजा आम्भी ने सिकन्दर को भारत पर आक्रमण करने का आमन्त्रण दिया। पुरू का राज्य झेलम और रावी नदियों के बीच में था। सिकन्दर से युद्ध की खबर सुनकर पुरू ने अपनी सेना को भी युद्ध के लिए तैयार कर लिया।

सिकन्दर का आक्रमण : उन दिनों यूरोप महाद्वीप के युनान देश में मेसिडोनिया नाम का एक राज्य था। वहाँ का राजा सिकन्दर अपनी विशाल सेना लेकर दुनिया जीतने के इरादे से चला। वह पारसीक (हखमनी) साम्राज्य के सम्राट व अन्य बहुत से राजाओं को हराता हुआ सिन्धु नदी के किनारे पहुँचा। वहाँ उसने बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को हराया। इनमें से एक राजा था पुरू जिसकी कहानी चित्रकथा के रूप में आपने पढ़ी।

अब सिकन्दर की सेना लड़ते-लड़ते थक चुकी थी। जब उसने मगध के राजा धनन्नद की विशाल सेना के बारे में सुना तो उसने मगध की सेना से लड़ने से इन्कार कर दिया और वे मेसिडोनिया लौट गये।

3. आपका जनपद (जिला) कई तहसीलों से मिलकर बना है। कई जनपदों से मिलकर आपका प्रदेश बना है। इसी प्रकार प्राचीन काल में छोटे-छोटे जनपद मिलकर महाजनपद बन गए।

जन से जनपद एवं महाजनपद : लगभग 600 ई० पू० में महाजनपदों का विकास हुआ। इस समय वैदिक काल के जन का स्वरूप बदल गया और ये जनपद से महाजनपद बन गये।

महाजनपदों का निर्माण

☞ कुछ जनों (समूह) ने विकास किया, फलस्वरूप महाजनपद का स्वरूप प्राप्त कर लिया।

☞ कुछ जनपदों के क्षेत्र बड़े थे। साथ ही दूसरे जनपदों की तुलना में ज्यादा शक्तिशाली भी थे। यही जनपद महाजनपद कहलाए। 600 ई०पू० में 16 महाजनपद थे। इन महाजनपदों में से चौदह में राजतन्त्र तथा दो में गणतंत्र था।

इसके अतिरिक्त कुछ गणराज्य और भी थे जिनका प्रशासन भी गणतन्त्रीय था जैसे-कपिल वस्तु के शाक्य, वैशाली के लिच्छवि, पावा के मल्ल आदि।

पाठ-6 : नए धार्मिक विचार

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. जैन धर्म
2. कपिलवस्तु
3. नेपाल
4. 24
5. ये सभी

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य
2. शुद्धोधन
3. दिगम्बर, श्वेताम्बर
4. मैरी
5. भद्रबाहु

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✗
3. ✓
4. ✓
5. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. पारंपरिक मान्यता के अनुसार जैन धर्म के संस्थापक उनके प्रथम तीर्थकर आदिनाथ थे।
2. बौद्ध धर्म के संस्थापक भगवान बुद्ध थे।
3. प्रमुख धार्म हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, यहूदी धर्म, पारसी धर्म और ईसाई धर्म है।
4. यहूदी धर्म के प्रर्वतक पैगंबर अब्राहम या इब्राहिम से माना जाता है, जो ईसा से 2000 साल पहले हुए थे।
5. जैन धर्म की दो शाखाओं के नाम-दिगम्बर जैन, श्वेताम्बर जैन।
6. जैन धर्म के संस्थापक प्रथम तीर्थकर ऋषभ देव या आदिनाथ है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड और इण्डोनेशिया में भी हुआ।
2. अष्टांगिक मार्ग

   ☞ सम्यक् दृष्टि– मनुष्य को सदैव चार आर्य सत्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

   ☞ सम्यक् संकल्प– उसे दूसरों को दु:ख न पहुँचाने का संकल्प लेना चाहिए।

   ☞ सम्यक् वचन– सदैव सत्य बोलना।

☞ सम्यक् कर्म– सदा उत्तम कार्य करना चाहिए।

☞ सम्यक् आजीव– परिश्रम और ईमानदारी से धन कमाकर जीवन चलाना चाहिए।

☞ सम्यक् प्रयत्न– उसे सद्वृत्ति का पालन करना चाहिए।

☞ सम्यक् विचार– वह सदैव मन, वचन, कर्म और शरीर का ध्यान रखते हुए पथभ्रष्ट न हो।

☞ सम्यक् स्मृति– उचित ध्यान द्वारा निर्माण प्राप्त करना चाहिए।

3. **श्वेताम्बर तथा दिगम्बर सम्प्रदायों में अंतर**

श्वेताम्बर

1. ये लोग नंगे नहीं रहते हैं तथा सफेद वस्त्र धारण करते हैं।
2. ये जैन धर्म की मूल शिक्षाओं में विश्वास नहीं करते हैं।
3. इसके प्रर्वतक स्थूलभद्र थे।

दिगम्बर

1. ये लोग नंगे रहते हैं।
2. जैन धर्म की मूल शिक्षाओं में विश्वास करते हैं।
3. इसके प्रवर्तक बाहुभद्र थे।

4. जैन धार्म के सिद्धान्त : महावीर स्वामी ने सद्व्यवहार और सच्चरित्र के लिए पाँच महाव्रतों पर बल दिया। वे इस प्रकार हैं–

अहिंसा – किसी प्रकार की हिंसा न करना।

सत्य – झूठ न बोलना।

अस्तेय – चोरी न करना।

अपरिग्रह – धन संग्रह न करना।

ब्रह्मचर्य – अविवाहित रहकर संवेदी अंगों पर नियंत्रण रखना।

लगभग 2000 वर्ष पश्चात जैन धर्मावलम्बी दो सम्प्रदायों में बँट गए- प्रथम, दिगम्बर (वस्त्रहीन उपासक), दूसरा श्वेताम्बर (सफेद रंग के वस्त्र धारण करने वाले)।

5. अपनी संवेदी ग्रंथियों पर विजय प्राप्त करने के कारण वे महावीर कहलाए। 'कैवल्य' या पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त वे जिन कहलाए। उनके अनुयायियों को जैन कहकर पुकारा गया। उनकी शिक्षाओं का प्रसार एवं प्रचार उस समय के लोगों की आम भाषा पालि में किया गया। उन्होंने त्रिरत्नों पर जोर दिया– वचन, मन और कर्म से शुद्ध होना।

सम्यक् दर्शन – सच्चे देव के दर्शन करने चाहिए।

सम्यक् ज्ञान – शुद्ध ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

सम्यक् चरित्र – शुद्ध आचरण रखना चाहिए।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **जैन एवं बौद्ध धार्म का उदय**

महाकाव्य युग के दौरान, प्रारंभिक आर्यों द्वारा स्थापित वैदिक धर्म का पालन किया जाता था। यह समाज के जीवन को नियमित करता था। हिंदू धर्म की दार्शनिक परंपराओं का अनुसरण करते हुए ज्ञान प्राप्ति द्वारा मोक्ष प्राप्ति की जिज्ञासा बनी रही। इसी से जैन तथा बौद्ध धर्मों का उदय हुआ है। ये दोनों धर्म मोक्ष प्राप्ति के महान मार्ग माने जाने लगे। बौद्ध धर्म तो एशिया में कई भागों में फैल गया। ये भी हिंदू धर्म के ही अंग है।

2. **भक्ति :** भारत में जैन और बौद्ध धर्म के साथ-साथ भगवान शिव, विष्णु और दुर्गा जैसी देवियों की मूर्तियों की पूजा-अर्चना हिंदू धर्म के अंतर्गत की जाने लगी। इन मूर्तियों की पूजा को भक्ति कहा गया। भक्ति से अभिप्राय सामान्यतः मनुष्य द्वारा अपने आराध्य देवता या देवी की मूर्ति के प्रति समर्पण है। हिंदुओं का पवित्र ग्रंथ भगवद्गीता भक्ति के विचार को परिलक्षित करता है।

भक्ति मार्ग में लोग अपनी पसंद के देवता और देवी की हृदय से आराधना करते हैं। भक्त मूर्ति की पूजा करता है तथा मूर्ति मनुष्य, वृक्ष या पशु का रूप धारण कर लेती है। भक्ति करने वाला भक्त कहलाता है। लोग मंदिर में मूर्ति स्थापित कर ईश्वर की पूजा करते हैं।

देवी, देवताओं और ईश्वर की सुंदर मूर्तियाँ पत्थर, संगमरमर या टेरीकोटा की बनाई जाती हैं। भक्त लोग मूर्ति के समक्ष घी, तेल आदि के दीपक तथा धूप जलाकर अपने आराध्य की पूजा मंत्र, भजन या गीत गाकर करते हैं।

3. बौद्ध धर्म के संस्थापक भगवान बुद्ध थे। उनका जन्म नेपाल में लुम्बिनी वन के निकट कपिलवस्तु में 563 ई० में हुआ था। उनके पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के राजा थे। यह वह समय था जब लोगों के जीवन में तेजी से परिवर्तन हो रहे थे। वे शाक्य गणराज्य के सम्राट थे। उनकी माता का नाम 'माया देवी' था। इनका पालन-पोषण इनकी विमाता गौमती ने किया था। इनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। बुद्ध का विवाह यशोधरा नाम की सुंदर राजकुमारी से हुआ था। 29 वर्ष की अवस्था में उनके

यहाँ राहुल नामक पुत्र ने जन्म लिया। उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति, एक बीमार और शव यात्रा को देखा जिससे वह एक साधु बन गए। 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने दुःखों के कारण का पता लगाने के लिए अपने पिता, महल, पत्नी और पुत्र को छोड़ दिया।

सच्चे ज्ञान और शांति की तलाश में उन्होंने बहुत दिनों तक कठोर तपस्या की। इसके उपरांत वह बोधगया (बिहार) चले गए। जहाँ उन्होंने महान ऋषियों का सान्निध्य प्राप्त किया। बोधगया में पीपल के पेड़ के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ जहाँ उन्हें यह पता चला कि मनुष्य अपने दुःखों से छुटकारा कैसे प्राप्त कर सकता है और वह वहीं से बुद्ध कहलाए।

4. **जैन धार्म का प्रसार :** मुख्यतः व्यापारियों ने जैन धर्म का समर्थन किया। किसानों के लिए इन नियमों का पालन अत्यंत कठिन था क्योंकि फसल की रक्षा के लिए उन्हें कीड़े-मकोड़ों को मारना पड़ता था। बाद की शताब्दियों में जैन धर्म उत्तर भारत के कई हिस्सों के साथ-साथ गुजरात, तमिलनाडु और कनार्टक में भी फैला।

महावीर की मृत्यु के लगभग दो सौ वर्षों के बाद जैन धर्म दो संप्रदायों में बँट गया-

1. दिगम्बर
2. श्वेताम्बर

दिगम्बर संप्रदाय के अनुयायी रूढ़िवादी हैं, जो स्वयं को कष्ट देने में विश्वास करते हैं तथा नग्न रहते हैं। श्वेताम्बर भद्रबाहु के अनुयायी हैं, जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।

पाठ-7 : मौर्य एवं शुंग काल

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. चंद्रगुप्त
2. बिन्दुसार
3. बौद्ध
4. मेगस्थनीज
5. 321 ई०पू०
6. अशोक महान
7. 263 ई०पू०

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. चंद्रगुप्त मौर्य
2. चंद्रगुप्त मौर्य
3. महेंद्र
4. सीलोन
5. कलिंग

ग. इस चित्र को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए-

1. अशोक स्तम्भ
2. सारनाथ
3. भारत सरकार का राष्ट्र चिन्ह
4. उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट सारनाथ स्थित स्तंभ के ऊपर चार शेरों को दर्शाया गया है इसके ऊपर एक धर्मचक्र भी बनाया गया है।

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. चन्द्रगुप्त मौर्य मौर्य वंश का राजा था।
2. चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त ने नन्द राजाओं को उखाड फेंका तथा 321 ई० पू० मे मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
3. मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी जो कि वर्तमान मे पटना के नाम से जानी जाती है।
4. अशोक बौद्ध धर्म का कट्टरवादी अनुगामी था। उसका धम्म बौद्ध धर्म की शिक्षाओं से प्रभावित था।
5. अशोक महान बिंदुसार का पुत्र था। वह 273 ई० पू० मे मगध के सिंहासन पर बैठा। अशोक महान की गणना भारत के महानतम् शासकों मे की जाती है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. **सैल्युकस निकेटर पर आक्रमण (305 ई० पू०)**

   सिकन्दर महान का सेनापति सैल्युकस निकेटर, भारत के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों को विजित करना चाहता था परन्तु चन्द्रगुप्त ने उस पर अपनी बड़ी सेना द्वारा आक्रमण करके उसे ऐसा करने से रोक दिया। सैल्युकस को हार का मुँह देखना पड़ा तथा बदले में उसे अपनी पुत्री हेलेन का विवाह चन्द्रगुप्त से करना पड़ा। इसके अतिरिक्त उसने हिन्दुकुश पर्वत का अपना राज्य चन्द्रगुप्त को संधि के माध्यम से उपहार में दिया। सैल्युकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा जहाँ वह लगभग 6 वर्ष तक रहा। मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी जो कि वर्तमान में पटना के नाम से जानी जाती है। चंद्रगुप्त मौर्य ने लगभग 25 वर्ष तक शासन किया। उसके पश्चात् उसके पुत्र बिन्दुसार ने लगभग सत्ताइस वर्ष तक शासन किया। तत्पश्चात् 272 ईसा पूर्व बिन्दुसार के पुत्र अशोक महान ने राज किया।

2. कलिंग की लड़ाई अशोक महान और उड़ीसा राज्य के कलिंग के राजा के मध्य हुई जिसमें अशोक विजयी हुआ। युद्ध के

मैदान में नरसंहार को देखकर उसका हृदय परिवर्तित हुआ और उसने भविष्य में कभी युद्ध न करने की शपथ ली।

3. शिशुनाग वंश के पश्चात् मगध पर नन्द वंश का शासन हुआ। मगध का शासक घनानंद अत्याचारी शासक था। एक बार उसने अपने दरबार में चाणक्य को कुरूप कहकर उसका अपमान कर दिया। चाणक्य वहाँ से चला आया। रास्ते में उसे एक बालक खेलता हुआ मिला जो एक चट्टान पर बैठा हुआ था और राजा बनकर अपने साथियों की समस्याओं को हल कर रहा था। चाणक्य उससे बहुत प्रभावित हुआ। ओर उसे अपना शिष्य बना लिया। चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त ने नन्द राजाओं को उखाड़ फेंका तथा 321 ई० पू० में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

4. मौर्य साम्राज्य में आय के मुख्य साधन विभिन्न प्रकार के कर थे। प्रजा से कृषि, सिंचाई, बिक्री आदि पर कर वसूल किए जाते थे। जंगल, सीमा शुल्क, व्यापार, खनन भी आय के साधन थे। करों से प्राप्त धन को योजनाओं, विकास कार्यों, सरकारी कर्मचारियों के वेतन, दान आदि पर खर्च किया जाता था। इन करों का हिसाब-किताब रखने के लिए लेखा-जोखा रखा जाता था।

   तक्षशिला, पाटलिपुत्र, उज्जैन और भड़ौच भारत में व्यापार के मुख्य केन्द्र थे। जबकि रोम, मिस्र, चीन, श्रीलंका विदेश स्थित व्यापारिक केन्द्र थे।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. सामाजिक और आर्थिक स्थिति

अर्थव्यवस्था : अधिकांश लोग कृषक थे जो अपनी अथवा राजा की भूमि पर खेती करते थे। गाँवों में चरवाहे भी होते थे। शिल्पकारों में बढ़ई जुलाहे, सुनार, लुहार, कुम्हार आदि सम्मिलित थे। जो गाँवों तथा नगर में रहते थे। अन्य लोग व्यापार तथा वाणिज्य से आजीविका प्राप्त करते थे। उस समय व्यापार उन्नत अवस्था में था।

समाज : मौर्य समाज व्यवस्था के अनुसार विभाजित था। विद्वानों विशेषत: ब्राह्मणों को समाज में अच्छा सम्मान दिया जाता था। उन्हें उच्च पद भी दिए जाते थे। ब्राह्मणों तथा जैन एवं बौद्ध भिक्षुओं को कर नहीं देना पड़ता था। इस युग में तक्षशिला, काशी, पाटलिपुत्र तथा अन्य अनेक स्थान शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। अपने जीवन के अंत में चंद्रगुप्त ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। उसने राज-पाठ त्यागकर श्रवण बेलगोला (कर्नाटक) में शरण ली, जहाँ उसकी मृत्यु हो गयी।

2. **मौर्य साम्राज्य का पतन** – 232 ई० पू० अशोक की मृत्यु के पश्चात् मौर्य साम्राज्य पतन की ओर जाने लगा। कहते हैं कि अशोक ने अपनी पूरी शक्ति तथा राज्य के संसाधन नैतिक तथा कल्याणकारी समाज की स्थापना के लिए समर्पित कर दी। इससे संसाधनों के अभाव में सेना तथा प्रशासन दोनों कमजोर होते हुए। अंतिम मौर्य शासन 'बृहद्रथ' ने सेना का विश्वास खो दिया। सेनापति 'पुष्यमित्र' शुंग ने 1875 ई० पू० राजा का वध कर दिया और स्वयं राजा बन गया। भारत के इतिहास में बारहवीं शताब्दी तक मात्र यही एक ऐसी घटना है जब किसी राजा का वध किया गया हो।

3. अशोक ने यह अपना कर्त्तव्य समझा कि धम्म की शिक्षाओं का प्रचार बिना किसी जाति, वंश, धर्म आदि के भेदभाव के किया जाना चाहिए। उसने धर्म विभाग की स्थापना की तथा उसके प्रचार के लिए धर्माधिकारी, धर्म महामात्रों की नियुक्ति की जो जगह-जगह धर्म प्रचार का कार्य करते थे।

   अशोक ने अपनी शिक्षाओं तथा संदेशों को शिलाओं और स्तंभों पर खुदवाया ताकि लोग उसकी मृत्यु के उपरान्त भी उन्हें पढ़ सकें। अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र, पुत्री संघमित्रा तथा पोते को श्रीलंका अपने धम्म की शिक्षाओं के प्रसार के लिए भेजा। इन उपदेशों का प्रचार करने के लिए दूत सीरिया, मिस्र तथा यूनान भी भेजे गए। इसके अतिरिक्त उसने स्तूपों, धार्मिक स्मारकों तथा बौद्ध विहारों का निर्माण कराया। उसने भोपाल के पास मध्य प्रदेश में साँची का स्तूप बनवाया।

   अशोक ने प्रजा की भलाई के लिए सड़कें बनवाईं, कुएँ खुदवाए तथा यात्रियों के विश्राम करने के लिए सरायें बनवाईं। उसने बीमार मनुष्यों और पशुओं के इलाज के लिए अस्पताल भी बनवाए। इसलिए भारतीय इतिहास में उसे अशोक महान के नाम से जाना गया।

4. मेगस्थनीज की इण्डिका और कौटिल्य (चाणक्य) के अर्थशास्त्र पुस्तकों से मौर्यों के विशाल प्रशासन तंत्र की जानकारी मिलती है। चन्द्रगुप्त सारे अधिकार अपने ही हाथों में रखे हुए था। राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद् गठित थी। बुद्धिमान लोग इसके सदस्य थे जो राजा को सलाह देते थे चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे।

5. **कला एवं स्थापत्य :** कला तथा स्थापत्य के क्षेत्र में मौर्य शासकों ने असीम योगदान दिया। मौर्य शासकों को स्तूपों, मठों तथा विहारों के निर्माण का शौक था। मध्य प्रदेश में भोपाल के निकट स्थित साँची का महान स्तूप अशोक द्वारा बनवाया गया

था। यद्यपि अशोक ने भारत और एशिया में 8400 से ज्यादा स्तूप तथा विहार बनवाए थे। अशोक ने चट्टानों और पत्थरों के स्तंभों पर बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और उपदेशों को खुदवाया। शिलालेख ब्राह्मी लिपि में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को दर्शाते हैं। उत्तर प्रदेश में वाराणसी के निकट सारनाथ स्थित स्तंभ के ऊपर चार शेरों को दर्शाया गया है इसके ऊपर एक धर्मचक्र भी बनाया गया है।

छ. निम्नलिखित तिथियों का क्या महत्व है -

1. 321 ई०पू० मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
2. 261 ई०पू०कंलिग की लडाई लड़ी गई।
3. 273 ई०पू०पूर्व बिंदुसार के पुत्र अशोक महान ने राज किया।
4. 232 ई०पू०अशोक की मृत्यु के पश्चात मौर्य साम्राज्य पतन की ओर जाने लगा।

पाठ-8 : गुप्त साम्राज्य का राजनीतिक विकास

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. श्रीगुप्त
2. बौद्ध धर्म
3. समुद्रगुप्त से
4. समुद्रगुप्त
5. चन्द्रगुप्त द्वितीय

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. चन्द्रगुप्त द्वितीय
2. चीनी यात्री
3. गणितज्ञ
4. काली
5. कुमार गुप्त प्रथम

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓
2. ✗
3. ✓
4. ✗
5. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. हूण वास्तव मे तिब्बत की घाटियों मे बसने वाली जाति थी जिसका मूल स्थान वोल्गा के पूर्व में था। वे 370 ई० में यूरोप में पहुँचे और वहाँ विशाल हूण साम्राज्य खडा किया।
2. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य भारत के गुप्त वंश के महानतम एवं सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट थे। उनका राज्यकाल मे गुप्त राजवंश अपने चरम उत्कर्ष पर था।

3. इस काल के दो प्रमुख मन्दिर है–तिगवा का विष्णु मन्दिर (जबलपुर, मध्यप्रदेश), भूमरा का शिव मन्दिर (नागोद, मध्यप्रदेश), देवगढ का दशावतार मन्दिर (झाँसी, उत्तर प्रदेश) तथा ईंटो से निर्मित भीतरगावँ का लक्ष्मण मन्दिर (कानपुर उत्तर प्रदेश)।

4. फाह्यान एक चीनी यात्री था। जिसकी बौद्ध धर्म मे बहुत रुचि थी। वह चीन से 399 ई० पू० मे रवाना हुआ तथा गोबी मरुस्थल को पार करता हुआ पश्चिमोत्तर की ओर भारत मे प्रविष्ट हुआ। फाह्यान ने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन के समय 405 ई० मे भारत का भ्रमण किया।

5. चन्द्रगुप्त प्रथम ने 320 ईस्वी को गुप्त वंश की स्थापना की थी और यह वंश करीब 510 ई० तक शासन मे रहा। 463–473 ई० मे सभी गुप्त वंश के राजा थे।

6. समुद्रगुप्त के सफल सैन्य अभिमानों के कारण ही उसे भारत का नेपोलियन कहा जाता है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. **समुद्रगुप्त (325–375 ई० पू०)**

अपने पिता चन्द्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद समुद्रगुप्त सिंहासन पर बैठा। उसे गुप्त वंश का सबसे प्रतापी राजा कहा जाता है। वह एक महान सेनानायक था। उसके दरबारी हरिषेण ने इलाहाबाद स्तम्भलेख प्रयाग प्रशस्ति पर खुदवाए विवरण में समुद्रगुप्त के शासन और विजयों की सर्वाधिक प्रमाणित सूचनाएँ उपलब्ध कराई हैं।

समुद्रगुप्त का प्रत्यक्ष शासन बंगाल से दिल्ली तक फैला था। समुद्रगुप्त के सफल सैन्य अभियानों के कारण ही उसे भारत का नेपोलियन कहा जाता है। समुद्रगुप्त केवल एक वीर योद्धा ही नहीं अपितु एक कवि, संगीतज्ञ और योग्य प्रशासक भी था। उसने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन कराया। गुप्त साम्राज्य में सैनिक प्रणाली को लागू कराने का श्रेय भी उसी को जाता है। उसने सोने के सिक्के चलवाए जिन पर अश्वमेघ को उत्कीर्ण किया गया था।

2. **स्कन्दगुप्त (455 – 467 ई०पू०)**

स्कन्दगुप्त के शासनकाल में मध्य एशिया की जनजाति हूणों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। जहाँ भी हूण गए वहाँ उन्होंने अराजकता, अशांति और आगजनी फैला दी, परन्तु गुप्त शासकों ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। तो हूणों के आक्रमण पुनः शुरू हो गए और बाद में कमजोर उत्तराधिकारियों ने उनके आगे

घुटने टेक दिए। इस प्रकार हूणों ने गुप्त साम्राज्य को नष्ट कर दिया।

3. फाह्यान एक चीनी यात्री था, जिसकी बौद्ध धर्म में बहुत रुचि थी। वह चीन से 399 ई० में रवाना हुआ तथा गोबी मरुस्थल को पार करता हुआ पश्चिमोत्तर की ओर भारत में प्रविष्ट हुआ। फाह्यान ने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन के समय 405 ई० में भारत का भ्रमण किया। वह यहाँ 7 वर्ष ठहरा तथा उसने गुप्त साम्राज्य का भ्रमण किया। उसने गुप्तकाल में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दशाओं का अध्ययन किया। वह मगध साम्राज्य तथा पाटलिपुत्र की समृद्धि से बहुत प्रभावित था। पाटलिपुत्र में शानदार महल और इमारतें थीं। विभिन्न जातियों तथा धर्मों के लोगों के बीच सौहार्द था। 411 ई० में वह ताम्रलिप्ति से सिंहल द्वीप गया तथा जावा होते हुए चीन वापस लौटा।

4. प्रशासन में राजा का स्थान सबसे प्रमुख होता था। वह मंत्रियों के परामर्श एवं सहायता से शासन चलाता था। गुप्त साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित कर विषयों में बाँटा गया था। प्रत्येक मुक्ति का शासन एक उपरिक महाराज द्वारा चलाया जाता था। प्रशासन की देखभाल गाँव का मुखिया तथा कुछ वरिष्ठ ग्रामीणों की सहायता से करता था। उनका कार्य ग्राम प्रशासन को चलाना था। उसका मुख्य कार्य गाँव में कानून और शांति व्यवस्था बनाए रखना था नगरपालिका अपने सदस्यों में से निर्वाचित पार्षदों की सहायता से अपना प्रशासन चलाती थी कानून को दो भागों में बाँटा गया था- दीवानी और फौजदारी।

5. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के पुत्र कुमारगुप्त ने अपनें पूर्वजों के विशाल साम्राज्य को सुरक्षित रखा। उसके शासनकाल में शान्ति और समृद्धि कायम रही। वह गुप्त साम्राज्य का शक्तिशाली और बुद्धिमान शासक था।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **गुप्त साम्राज्य :** मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद कुछ शताब्दियों तक उत्तर भारत में कोई भी विशाल साम्राज्य नहीं था। ईसा की तीसरी शताब्दी में भारत में राजनैतिक एकता का अभाव था यह साम्राज्य गुप्त सम्राज्य था।

गुप्त साम्राज्य का पतन : स्कंदगुप्त के उत्तराधिकारी कमजोर तथा अयोग्य शासक थे। वे अपने पूर्वजों का विशाल साम्राज्य कायम नहीं रख सकें। परिणामस्वरूप साम्राज्य के दूरवर्ती अनेक क्षेत्रों के गवर्नरों ने विद्रोह करके स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। हूणों के आक्रमणों ने भी गुप्तों की सत्ता को अंततः नष्ट

कर दिया।

2. **गुप्त वंश के शासक** – गुप्त वंश की उत्पत्ति रहस्य की पर्तों में दबी है समुद्रगुप्त की 'प्रयाग प्रशस्ति' तथा स्कंदगुप्त के भीतर स्तम्भ अभिलेखों के अनुसार 'श्रीगुप्त' गुप्त वंश का संस्थापक था जो मगध साम्राज्य के अधीन एक सामन्त था उसने 240 ई० से लेकर 280 ई० के लगभग शासन किया। उसका राज्य मृग शिखावन के आस-पास के प्रदेशों तक सीमित था। श्रीगुप्त का उत्तराधिकारी घटोत्कच था। इसने लगभग 280 ई० से 320 ई० तक राज्य किया था।

पाठ-9 : हर्ष का साम्राज्य

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. प्रभाकरवर्धन
2. नालंदा
3. हर्ष

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. कन्नौज
2. लेखक
3. थानेस्वर
4. महानशासक
5. न्यायप्रिय, उदार
6. कुमार अमात्य
7. चीनी

ग. मिलान करो-

1. रत्नावली	अ. हर्ष लिखित नाटक
2. प्रभाकरवर्धन	ब. वर्धन वंश का संस्थापक
3. हर्षवर्धन	स. सी-यू-की
4. ह्वेनत्सांग	द. नागानंद
5. बाणभट्ट	य. हर्षचरित

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. वर्धान वंश की स्थापना 580-605 ई० मे वर्धन वंश के संस्थापक प्रभाकरवर्धन ने की थी। वह थानेस्वर का शासक था।
2. जिले के अधिकारी को मुख्य प्रशासनिक प्रमुख को कलेक्टर के रुप मे जाना जाता है। वहीं जिला मजिस्ट्रेट को जिले का डीसी या डीएम भी कहा जाता है।
3. राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन सोलह वर्ष की अल्पायु मे 606 ई० मे सिंहासन पर बैठा।

4. जिला मजिस्ट्रेट के रुप मे वह कानून और व्यवस्था के लिये जिम्मेदार है और पुलिस और अभियोजन एजेंसी के प्रमुख है, जिलाधिकारी के रुप मे विकास उपाध्यक्ष, विकास पंचायत, स्थानीय निकायों, नागरिक प्रशासन आदि।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. हर्ष 'नालंदा विश्वविद्यालय' (बिहार) को आर्थिक अनुदान दिया करता था। वह विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म की शिक्षाओं तथा उच्च शिक्षा का एक महान केन्द्र था। यहाँ साहित्य, दर्शन गणित, विज्ञान, खगोल, धर्म आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। बारहवीं शताब्दी तक नालंदा-विश्वविद्यालय शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र रहा। बाद में तुर्क आक्रांताओं ने इसे नष्ट कर दिया। तक्षशिला, उज्जैन तथा गया भी उस समय के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय थे।

2. राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन सोलह वर्ष की अल्पायु में 606 ई० में सिंहासन पर बैठा। उसने थानेश्वर एवं कन्नौज के राज्य को अपने राज्य में मिला दिया तथा अपनी राजधानी को थानेश्वर से हटाकर कन्नौज में स्थापित कर दिया।

   हर्ष का साम्राज्य पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा उड़ीसा तक फैला हुआ था। हर्ष की शासन व्यवस्था गुप्तकालीन प्रशासन की ही तरह थी। कुछ राजा अपने राज्यों पर स्वतंत्र रूप से शासन तो करते थे परन्तु हर्ष की प्रभुसत्ता के अंतर्गत वे राजा को नियमित रूप से शुल्क देते थे। पूरे साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिसे 'देश' कहते थे।

3. उत्तर भारत में वैष्णव तथा दक्षिण भारत में शैव धर्म का अधिक प्रचलन था। प्रारम्भ में हर्ष शिव तथा सूर्य का उपासक था। बाद में हर्ष ने भी बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय को अपना लिया। वह बौद्ध भिक्षुओं की संगीतियों का आयोजन करता था तथा महायान सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को प्रचारित करता था। प्रत्येक पाँच वर्ष के बाद वह प्रयाग में 'माघ मेले' का आयोजन करता था जो एक धार्मिक वर्ग था।

4. ह्वेनत्सांग एक चीनी यात्री था। जिसकी बौद्ध धर्म में गहरी आस्था थी। जो हर्षवर्धन के काल में भारत की यात्रा पर आया। ह्वेनत्सांग ने भारत के विभिन्न हिस्सों में जाकर बौद्ध स्तूपों का भ्रमण किया। उसने 629 ई० में चीन से प्रस्थान किया तथा गोबी के मरुस्थल को पार करके कुछ दिन मध्य एशिया तथा अफगानिस्तान में बिताए। अपनी यात्रा के समय ह्वेनत्सांग हर्ष के महल में ही रुका तथा वहाँ उसे अतिविशिष्ट सम्मान मिला।

5. पूष्यभूति वंशीय शासक हर्षवर्धन (606-647) महान विजेता एवं

साम्राज्य निर्माता होने के साथ-साथ एक उच्च प्रतिभा के धनी नाटकार भी थे। हर्ष को संस्कृत में लिखित तीन नाटको को रचियता माना जाता है- रत्नावली, नागानन्द, प्रियदर्शिका

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. **हर्ष का प्रशासन** - ह्वेनत्सांग के अनुसार, हर्ष एक न्यायप्रिय तथा उदार शासक था। वह अपने राज्य की स्थितियों की जानकारी स्वयं निरीक्षण द्वारा लिया करता था। प्रशासन में उसकी सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद थी। उसने अपने साम्राज्य को कई प्रांतों में बाँट दिया जिन्हें देश कहा जाता है। इन देशों का शासन गवर्नर करते थे जो कुमार अमात्य थे। ये अपने निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होते थे। गवर्नरों को 'जागीर' (भूमि) के रूप में वेतन दिया जाता था। बदले में गवर्नर, राजा को आवश्यकता पड़ने पर सैन्य सहायता देते थे। हर्ष ने कठोर दंड-विधान की व्यवस्था की थी। कुछ अपराधों के लिए मृत्युदंड भी दिया जाता था।

2. हर्षवर्धन को प्राचीन भारत का अंतिम महान् शासक माना जाता है। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद, भारत पुनः अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। सत्ता के विकेन्द्रीकरण की बढ़ती हुई प्रवृत्ति तथा प्रदेशवाद की भावना ने इस विघटन को बल दिया। थानेश्वर के वर्धन शासकों, वातापी के चालुक्यों तथा काँची के पल्लवों का महत्व बढ़ गया। इन राज्यों ने साहित्य, धर्म तथा स्थापत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया।

   हर्ष का साम्राज्य : 550 ई० के लगभग गुप्त साम्राज्य के नष्ट हो जाने के बाद कुरूक्षेत्र के निकट थानेश्वर में वर्धन वंश का उद्य हुआ। यह राज्य वर्धन वंश के शासकों द्वारा विकसित किया गया। इसके विषय में हमें हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट की रचना 'हर्षचरित' चीनी यात्री 'ह्वेनत्सांग' द्वारा लिखित वृत्तांतो, अभिलेखों तथा सिक्कों से पर्याप्त जानकारी मिलती है।

3. स्वयं कीजिए।

4. ह्वेनत्सांग के अनुसार, इस काल के लोग बड़े ही साधारण, ईमानदार तथा अनुशासित थे। जातिवाद का पालन करना अनिवार्य था। सामान्यतया लोग शुद्ध शाकाहारी थे, बिना सिले वस्त्र धारण करते थे तथा नंगे पैर रहते थे। धनी लोग ईटों से बने पक्के मकानों में तथा सामान्य लोग कच्चे मकानों में रहते थे। सफाई के प्रति लोगों में अधिक जागरूकता थी। जाति-प्रथा बहुत जटिल हो गई थी। अनेक उपजातियाँ अस्तित्व में आ गई थीं। ब्राह्मणों का स्थान समाज में ऊँचा था और अछूत प्रथा प्रचलित थी। समाज में सती-प्रथा का प्रचलन था तथा पर्दा प्रथा न के बराबर थी। हिंदू, बौद्ध तथा जैन तीन मुख्य धर्म थे।

पाठ-1 : विविधता में एकता

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 1652
2. 22
3. चार
4. पितृ-सत्तात्मक में

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. सातवाँ बड़ा
2. विभिन्नता
3. परंपरायें
4. की विधि एक धार्मिक

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✓
3. ✓
4. ✓
5. ✓
6. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. भारत विश्व के सबसे बडे देशों मे सातवें स्थान पर है और यह विश्व का सबसे बडा गणतन्त्रात्मक देश है। इसके भौतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश मे विविधता स्पष्ट रुप से दिखाई देती है।
2. जनजातीय तथा कृषक समाजों मे कई पीढियों के लोग एक साथ रहते है। इन समाजों में बडे तथा 'संयुक्त परिवार' होते है। इसके विपरीत, औद्योगिक। नगरीय समाज परिवार, पति, पत्नी तथा उसके बच्चों तक सीमित होते हैं। ऐसा परिवार 'एकाकी परिवार' कहलाता है।
3. प्राचीन काल से ही वस्त्र, शरण, भोजन तथा सुरक्षा की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति समस्त समाजों का प्रमुख उद्देश्य रहा है। मनुष्य इन आवश्यकताओं की पूर्ति कुछ नियमों तथा कार्य-प्रणालियों के अनुसार करता है। विकास - क्रम के आधाार पर आर्थिक प्रणालियों को तीन वर्गों मे रखा जाता है। आदिम आर्थिक व्यवस्था मे आखेट भोजन-संग्रह तथा आदिम कृषि सम्मिलित है। ये सभी प्राथमिक क्रियाएँ है।
5. भारत मे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी आदि प्रमुख धर्म हैं।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. एक धर्मनिरपेक्ष राज्य धर्मनिरपेक्षता से संबंधित एक विचार है,

जिसके द्वारा एक राज्य धर्म के मामलों में अधिकारिक तौर पर तटस्थ होने का दावा करता है, न तो धर्म और न ही अधर्म का समर्थन करता है एक धर्मनिरपेक्ष राज्य अपने सभी नागरिकों के साथ धर्म की चिंता किए बिना समान व्यवहार करने का दावा करता है और एक नागरिक के लिए उनके धार्मिक विश्वासों, संबद्धता या अन्य प्रोफाइल वाले लोगो की कमी के आधार पर तरजीही उपचार से बचने का दावा करता है।

यद्यपि धर्मनिरपेक्ष राज्यों को कोई राज्य धर्म नहीं होता, लेकिन एक स्थापित राज्य धर्म की अनुपस्थिति का मतलब यह नहीं है कि एक राज्य पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष या समतावादी है उदाहरण के लिए कुछ राज्य जो खुद को धर्मनिरपेक्ष बताते है, उनके राष्ट्रगान और झंडे या कानूनों में धार्मिक संदर्भ है जो एक धर्म या दूसरे को लाभ पहुँचाते हैं।

2. भारत विश्व के सबसे बड़े देशों में सातवें स्थान पर है और यह विश्व का सबसे बड़ा गणतन्त्रात्मक देश है। इसके भौतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश में विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। देश के विशाल भूक्षेत्र पर इसके भौतिक लक्षणों, जलवायु, वनस्पति, मृदा, खनिज पदार्थों, वन्य तथा मानव जीवन आदि में भौतिक-भौगोलिक विविधताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। ये सब मिलकर भौगोलिक पर्यावरण की रचना करते हैं। भौगोलिक पर्यावरण की विभिन्नताएँ देश की जीवन-शैली को प्रभावित करती हैं, जो प्रजातीय रूप से भी भिन्न हैं।

3. राजनीतिक रूप से भारत में प्राचीन काल से ही एकता रही है जो भोजन, वेशभूषा, गृह-प्रकार, भाषाओं, रीति-रिवाजों, उत्सव एवं पर्वों, मेलों, व्यवसायों आदि में स्पष्ट दिखाई पड़ती है। देश में लगभग 5,000 प्रजातीय वर्ग विद्यमान हैं, जो देश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की विविधता में वृद्धि करते हैं। देश के विभिन्न भागों में मेले आयोजित किए जाते हैं, जिसमें सभी लोग बिना किसी जाति या धर्म के भेदभाव के लोग होते हैं।

4. **जाति**- प्राचीन काल से ही भारत में चार वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र थे। इनमें ब्राह्मणों को सर्वश्रेष्ठ माना जाता था तथा शूद्रों को निम्नतम अर्थात् अछूत माना जाता था। कालान्तर में विभिन्न उपजातियाँ-कुम्हार, लुहार, बढ़ई, धोबी, लोधे, नाई, सुनार, बढ़ई आदि अस्तित्व में आईं। इस प्रकार से भारत विभिन्न प्रकार की जातियों तथा उपजातियों का देश कहा जाता है।

वर्ग- वर्ग का आधार आर्थिक होता है। इसमें किसी की धार्मिक तथा वैधानिक मान्यता नहीं है। वर्ग स्तर का निर्धारण व्यक्ति

की सम्पत्ति, उपलब्धि तथा क्षमता द्वारा किया जाता है। बॉटोमोर के अनुसार समाज में निम्नलिखित चार प्रकार के वर्ग मिलते हैं–उच्चतम वर्ग, मध्यम वर्ग, कर्मशील वर्ग तथा कृषक वर्ग।

धर्म– हमारे देश में विभिन्न प्रकार के धर्मों के मानने वाले लोग एक साथ रहते हैं। सभी लोग अपने–अपने धार्मिक रीति–रिवाजों तथा त्योहार स्वतन्त्र रूप से एक साथ मनाते हैं। भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध पारसी आदि प्रमुख धर्म हैं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **विविधता में एकता**– हमारे देश में विविधताएँ होने के बावजूद समानताएँ भी पाई जाती हैं, जैसे–भौगोलिक एकता, राजनीतिक एकता तथा सांस्कृतिक एकता।

   भारत एक भौगोलिक इकाई है। भारतीय उपमहाद्वीप अपनी प्राकृतिक सीमा–रेखाओं के कारण शेष संसार से पृथक् एक निजी व्यक्तित्व बनाए रख सकता है। राजनीतिक रूप से भारत में प्राचीन काल से ही एकता रही है जो भोजन, वेशभूषा, गृह–प्रकार, भाषाओं, रीति–रिवाजों, उत्सव एवं पर्वों, मेलों, व्यवसायों आदि में स्पष्ट दिखाई पड़ती है। देश में लगभग 5,000 प्रजातीय वर्ग विद्यमान हैं, जो देश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की विविधता में वृद्धि करते हैं। देश के विभिन्न भागों में मेले आयोजित किए जाते हैं, जिसमें सभी लोग बिना किसी जाति या धर्म के भेदभाव के लोग होते हैं। सभी समाजों में विवाह एक सार्वभौमिक संस्कार है। विभिन्न समुदायों के लोग बड़ी धूमधाम से विवाह की रस्में पूरी करते हैं। इसी प्रकार मृत्यु के बाद की रस्में भी प्रत्येक समुदाय में धार्मिक परम्परा के अनुसार पूरी की जाती हैं। उपर्युक्त के अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य, संगीत, नृत्य–कला के स्वरूपों, लोक गीतों, लोक–कलाओं आदि में भी विविधताओं से एकता दर्शनीय है।

   पंडित नेहरू ने अपनी पुस्तक ''डिस्कवरी ऑफ इंडिया'' में उचित ही लिखा है कि ''भारतीय एकता बाहर से थोपी गई नहीं है, अपितु यह कहीं अधिक गहरी है तथा इसमें विश्वास और रीति–रिवाजों के प्रति व्यापक सहिष्णुता विद्यमान है एवं प्रत्येक विविधता को प्रोत्साहन दिया जाता है।'' पंडित नेहरू ने ही सर्वप्रथम देश के लिए 'विविधता में एकता'' वाक्यांश का प्रयोग किया था। हमारा राष्ट्र–गीत भी इसी एकता का वर्णन करता है।

2. भारत विश्व के सबसे बड़े देशों में सातवें स्थान पर है और

यह विश्व का सबसे बड़ा गणतन्त्रात्मक देश है। इसके भौतिक तथा सांस्कृतिक परिवेश में विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। देश के विशाल भूक्षेत्र पर इसके भौतिक लक्षणों, जलवायु, वनस्पति, मृदा, खनिज पदार्थों, वन्य तथा मानव जीवन आदि में भौतिक-भौगोलिक विविधताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। ये सब मिलकर भौगोलिक पर्यावरण की रचना करते हैं। भौगोलिक पर्यावरण की विभिन्नताएँ देश की जीवन-शैली को प्रभावित करती हैं, जो प्रजातीय रूप से भी भिन्न हैं।

हमारा देश विभिन्न भाषा-भाषी देश है। हमारे देश के सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू-रहन-सहन, भोजन, वेशभूषा, परिवार, मकान, रीतिरिवाज, भाषाएँ, जातियाँ, धर्मों आर्थिक क्रियाकलाप आदि में विभिन्नता पाई जाती है लेकिन देश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस देश में जितनी अधिक विविधताएँ पाई जाती हैं उतनी ही अधिक एकता भी पाई जाती है। वह चाहे जो भी हो, चाहे हिंदू हो, मुसलमान हो, सिक्ख, ईसाई या पारसी क्यों न हो, राष्ट्रीय मामलों में वह सर्वोपरि एक भारतीय है। अगर देश के लिए मरने-मिटने की बात आ जाए तो सभी धर्मों एवं क्षेत्रों के लोग आपसी मतभेद भुलाकर राष्ट्रीय झंडे के नीचे एक खड़े हो जाते हैं।

3. आर्थिक क्रियाकलापों में विविधता प्राचीन काल से ही वस्त्र, शरण, भोजन तथा सुरक्षा की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति समस्त समाजों का प्रमुख उद्देश्य रहा है। मनुष्य इन आवश्यकताओं की पूर्ति कुछ नियमों तथा कार्य-प्रणालियों के अनुसार करता है। विकास-क्रम के आधार पर आर्थिक प्रणालियों को तीन वर्गों में रखा जाता है। आदिम आर्थिक व्यवस्था में आखेट, भोजन-संग्रह तथा आदिम कृषि सम्मिलित है। ये सभी प्राथमिक क्रियाएँ हैं। आर्थिक व्यवसाय मौसम की दशाओं पर भी निर्भर करता है। आदिम समाज अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में आत्मनिर्भर था। श्रम का विभाजन आयु तथा लिंग के आधार पर होता था। पुरुष प्रायः लड़ाई करना, आखेट हल चलाना, खेती करना जैसे कठिन कार्य करते थे, जबकि स्त्रियाँ बच्चों की देखभाल, पानी लाना, खाना पकाना आदि घरेलू कार्य करती थीं।

आदिम समुदायों ने भोजन-संग्रह तथा आखेट के स्थान पर क्रमशः भूमि को जोतकर खेती करने का ज्ञान विकसित किया। इससे कृषिपरक अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। इस व्यवस्था में समुदाय के सभी लोग भूमि जोतने, जंगलों को काटकर साफ करने, घर बनाने, पशु पालने आदि में एक-दूसरे की सहायता करते थे। कृषि के उद्भव के साथ ही हल विकसित किया

गया। मनुष्य ने जंतु-श्रम का उपयोग करना सीखा। उपभोग से अधिक उत्पादन होने पर 'लेन-देन प्रणाली' के आधार पर व्यापार विकसित हुआ। श्रम का विभाजन भी प्रारम्भ हुआ। सभी लोगों को कृषि में संलग्न होने की आवश्यकता नहीं थी। कुछ लोग अन्य कार्यों के लिए भी उपलब्ध थे। अतएव कुछ लोग कृषि में तथा अन्य कृषि उपकरण बनाने, घरेलू कार्यों के लिए फर्नीचर, बर्तन, वस्त्र आदि बनाने, सामान, हस्त-शिल्प आदि बेचने में लग गए। इन क्रियाकलापों को 'द्वितीयक क्रियाएँ' कहा जाता है। अन्य व्यक्ति तुच्छ तथा दूसरे सेवा-कार्यों में लग गए।

कृषि, हस्त-शिल्प, अधिशेष उत्पादन से व्यापारिक लाभ आदि के विकास ने यूरोप में औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात किया। यांत्रिक शक्ति औद्योगिक क्रांति का आधार थी। औद्योगिक क्रांति ने आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था का निर्माण किया। इस प्रणाली में विशाल उत्पादन, बड़ा संगठन, अत्युच्च प्रौद्योगिकी तथा 'तृतीयक व्यवसाय' सम्मिलित हैं। उत्पादन की औद्योगिक प्रणाली क्रियाकलापों की भूमिका तथा विशेषीकरण पर बल देती है। इस व्यवस्था में दक्षता, प्रशिक्षण, श्रम-विभाजन, योग्यता, शिक्षा तथा व्यक्ति की पात्रता पर निर्भर करता है। इन व्यवसायों में इंजीनियर, नर्स, डॉक्टर, वकील, शिक्षक आदि की भूमिकाएँ सम्मिलित हैं।

4. संयुक्त परिवारों का आकार बड़ा होता है। इनमें अनेक पीढ़ियों के लोग सम्मिलित होते हैं। भारत में सामूहिक परिवार व्यवस्था विकसित करने में परंपरागत सामाजिक संगठन, कृषक समाज, ग्रामीण समुदायों तथा धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कृषि तथा शिल्पों में संलग्न लोग आज भी परिवार को उत्पादन की इकाई मानते हैं। कृषक अपने परिवार के सदस्यों की सहायता से भूमि पर खेती करके खाद्यान्न उत्पादन करता है। इसी प्रकार सूनार, कुम्हार, लुहार आदि भी अपने परिवारजनों की सहायता से घर पर वस्तुएँ बनाते हैं।

विगत दशकों में संयुक्त परिवारों में विघटन हुआ है जिसके व्यावसायिक गतिशीलता, वेतन-आधारित आजीविका, औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा तथा व्यक्तिवादी विचारधारा उत्तरदायी रहे हैं। इन कारकों से सामूहिक परिवारों के प्रकार्य, आकार तथा महत्व में कमी आई है। नगरों में अधिकांश तथा अब ग्रामों में भी कुछ विवाहित युगल एकांकी परिवारों को पसंद करने लगे हैं। भारत में लंबे समय से सामूहिक परिवार-व्यवस्था चली आ रही है। ग्रामीण तथा जनजातीय क्षेत्रों में यह व्यवस्था आज भी प्रचलित है।

पाठ–2 : पंचायती राज और ग्रामीण प्रशासन

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. 3 2. ग्राम पंचायत
3. ये दोनों

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. 5 वर्ष 2. पंचायत समिति
2. पंचायत समिति 4. 250 रुपये

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✗ 2. ✓
3. ✗ 4. ✗

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. ग्राम सभा अपने अध्यक्ष का चुनाव भी करती है जिसे 'प्रधान' या 'सरपंच' कहा जाता है। कुछ पंचायतों मे प्रधान का पद अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति या स्त्रियों के लिए सुरक्षित किया गया है।
2. पंचायत समितियों के सभापति जिला परिषद के सदस्य होते हैं। विधान सभा, विधान परिषद और सांसद के सदस्य जिले से चुने जाते हैं तथा इसके सदस्य होते हैं। इसमे आरक्षित कोटे का भी प्रतिनिधित्व रहता है।
3. पंचायती राज के विभिन्न स्तर है–
   1. ग्राम स्तर 2. ब्लॉक या खंड स्तर
   3. जिला स्तर।
4. ग्राम स्तर पर चुनी गई ग्राम की सरकार को ग्राम पंचायत कहते हैं।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. प्रत्येक क्षेत्र में जितनी ग्राम पंचायतें होती हैं उनमें कार्यों की देख–रेख के लिए एक समिति होती हैं। पंचायत समितियों का कार्यकाल पाँच वर्षों के लिए होता है। पंचायत समिति अपना अध्यक्ष स्वयं चुनती है। पंचायत समिति के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी को खंड विकास अधिकारी कहते हैं।
2. **ब्लॉक समिति :** ब्लॉक स्तर पर स्थानीय स्वशासित संस्थाएँ ब्लॉक समिति या पंचायत समिति कहलाती है। यह स्थानीय स्वशासन का मध्य स्तर है। एक ब्लाक समिति में कई ग्राम सभा और ग्राम पंचायतों को सम्मिलित किया जाता है। ब्लॉक समिति के सदस्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं चुने जाते। प्रधान तथा

ग्राम पंचायत के पंचों द्वारा अपने ब्लॉक के अंतर्गत ब्लॉक समिति के सदस्यों का चुनाव करते हैं। चुने हुए प्रतिनिधियों के अतिरिक्त ब्लॉक समिति के अन्य सदस्य भी होते हैं, वे हैं –

1. विकास खंड में अपने वाले उपनगर क्षेत्र की समिति का अध्यक्ष, लोक सभा, राज्य सभा, विधान सभा और विधान परिषद् के सदस्य भी इसके सदस्य होते हैं।

2. विकास कार्यों का विशेष ज्ञान रखने वाले दो या तीन स्थानीय लोगों को भी पंचायत समिति का सदस्य मनोनीत किया जाता है। एक पंचायत का अध्यक्ष संपूर्ण विकास खंड की पंचायतों के अध्यक्षों द्वारा चुना जाता है।

3. **न्याय पंचायत** – साधारणत: तीन और चार गाँवों के लिए न्याय पंचायत होती है। प्रत्येक ग्राम पंचायत कुछ प्रतिनिधियों की नियुक्ति न्याय पंचायत के लिए करती है।

न्याय पंचायत केवल छोटे मुकदमें; जैसे – छोटी-मोटी चोरी, जुआ खेलना, किसी को चोट पहुँचाना इत्यादि मामूली दीवानी और फौजदारी के मामलों को निपटाती है। यह 250 रुपये तक जुर्माना लगा सकती है। न्याय पंचायत इस प्रकार के मुकदमे दोनों पक्षों में समझौता करवाकर भी सुलझाती है।

गाँव के पिछड़े लोगों के लिए न्याय पंचायत का बहुत महत्त्व है। इस प्रकार के समझौतों द्वारा न्याय शीघ्र तथा उचित होता है।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **पंचायती राज :** लोकतंत्र की सबसे छोटी इकाई गाँव है। पहले गाँव का एक मुखिया होता था तथा प्राय: मुखिया पैतृक होते थे। गाँव में लोगों पर मुखिया का प्रभुत्व होता है। गाँव के लोगों के छोटे-मोटे झगड़े मुखिया ही निपटा देते थे। जमींदारी प्रथा के अंतर्गत जमींदारों का भी गाँव में प्रभुत्व होता था। किसानों के जमींदार कृषि भूमि के स्वामी होते थे। वे ही किसानों को खेती के लिए जमीन देते थे तथा उनसे लगान वसूल करते थे।

किसानों को जमींदारों के यहाँ दासों की तरह काम भी करना पड़ता था। उस समय मुखिया या जमींदार गाँव की साधारण जनता का शोषण करते थे। स्वतंत्रता के पश्चात् अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोकतंत्रीय प्रथा लागू है जिसे पंचायती राज कहते हैं।

पंचायती राज के विभिन्न स्तर 1993 के अधिनियम के अनुसार पंचायती संस्थाएँ तीन स्तरों पर कायम की गईं –

1. ग्राम स्तर 2. ब्लॉक या खंड स्तर 3. जिला स्तर

ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायतें, खंड स्तर पर पंचायत समितियाँ तथा जिला स्तर पर जिला परिषद

त्रिस्तरीय ढाँचा

ग्राम स्तर ब्लाक स्तर जिला परिषद

ग्राम स्तर पर तीन तरह की संस्थाएँ कार्य करती हैं।

1. ग्राम सभा 2. ग्राम पंचायत 3. न्याय पंचायत

ग्राम सभा गाँव के सभी वयस्क स्त्रियाँ और पुरुष, जिनकी आयु अट्ठारह वर्ष या इससे अधिक हो, ग्राम सभा के सदस्य हो सकते है। ग्राम सभा एक गाँव या गावों का समूह हो सकता है। ग्राम सभा सभी व्यस्कों की सभा होती है, जो ग्राम पंचायत के सीमित क्षेत्र में रहते हैं।

ग्राम पंचायत ग्राम सभा के सदस्य गुप्त मतदान की प्रक्रिया से ग्राम पंचायत के सदस्यों का निर्वाचन करते हैं। ग्राम पंचायत ग्रामीणों की विभिन्न समस्याओं को सुनती है तथा ग्राम की स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाती है।

ग्राम पंचायत की निरंतर बैठक होती है तथा इसका एक महत्त्वपूर्ण कार्य है- गाँव के लोगों के विकास के लिए आवश्यक कार्यक्रम चलाना। ग्राम पंचायत का कार्य ग्राम सभा द्वारा स्वीकृत होना आवश्यक है। ग्राम सभा अपने अध्यक्ष का चुनाव भी करती है, जिसे 'प्रधान' या 'सरपंच' कहा जाता है। कुछ पंचायतों में 'प्रधान' का पद अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति या स्त्रियों के लिए सुरक्षित किया गया है।

2. **ब्लॉक समिति के कार्य**

ब्लॉक में स्थित सभी ग्राम सभाओं के द्वारा किए गए कार्यों का पर्यवेक्षण ब्लॉक समिति करती है सरकार के द्वारा संचालित ग्रामीण विकास योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू करना भी ब्लॉक समिति के कार्यों में सम्मिलित है। ब्लॉक समिति का एक मुख्य कार्य सरकार से ब्लॉक के विकास कार्यों के लिए वित्तीय सहायता का प्रबंध करवाना है।

ब्लॉक समिति ब्लॉक की पंचायत को विशेषज्ञों की सेवाएँ भी उपलब्ध करवाती हैं; जैसे - कृषि विशेषज्ञ, इंजीनियर, शिक्षा विशेषज्ञ, पशु चिकित्सक इत्यादि। जानवरों की नस्ल में सुधार के लिए भी सहायता दी जाती है। ये लोगों को विभिन्न प्रकार के जनकल्याण कार्यक्रमों का उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रत्येक ब्लॉक में एक-एक ब्लॉक विकास अधिकारी (B.D.O.) होता है। वह एक सरकारी कर्मचारी होता है, जो

ब्लॉक के मामलों की देख-रेख के लिए नियुक्त होता है।

3. **भूमि के अभिलेखों** - भूमि की नाप तथा उसका रिकॉर्ड रखना पटवारी का मुख्य कार्य होता है उसे लेखपाल भी कहते हैं। प्रत्येक पटवारी कुछ गाँवों के लिए कार्य करता है।

पटवारी का 'खसरा रिकॉर्ड' हमें सूचना देता है कि किस किसान के पास कितनी भूमि कृषि-योग्य है। पटवारी का कार्य लगान एकत्र करना तथा सरकार को फसल के बारे में पूरी सूचना देना है। इस कार्य के लिए वह रिकॉर्ड बनाता है तथा उसे समय-समय पर स्थिति के अनुसार परिवर्तित करता रहता है।

भारत के सभी राज्य जिलों में विभाजित है। भूमि से संबंधित मामलों को सुलझाने के लिए जिलों को 'तहसीलदार' में विभक्त किया जाता है। इसका अध्यक्ष जिलाधीश या डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर होता है तथा इसके बाद लगान कर्मचारी या तहसीलदार, नायाब तहसीलदार, कानूनगो तथा पटवारी होता है। जिलाधीश और तहसीलदार झगड़ों की सुनवाई करते हैं। वे पटवारी के कार्य का निरीक्षण भी करते हैं तथा स्पष्ट करते हैं कि अभिलेख सही है तथा उचित लगान एकत्र किया जा रहा है। वे किसानों को उनकी जमीन के रिकॉर्ड की अत्यधिक सही जानकारी देते हैं। विद्यार्थी भी अपना जाति प्रमाण-पत्र यहाँ से ले सकते हैं।

पाठ-3 : सरकार क्या है?

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. 1920 ई० 2. प्रजातान्त्रिक
3. संसदीय 4. इन सभी पर

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. संवैधानिक 2. अधिकार
3. समुदाय 4. कानून
5. तीन

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✓ 2. ✓
3. ✓ 4. ✗
5. ✗

घ. मिलान करो-

1. राजतंत्र क. प्रजातंत्र

2. तानाशाह — ख. अडोल्फ हिटलर
3. मताधिकार — ग. वयस्क
4. कनाडा — घ. जापान
5. यू०के० में महिलाओं का प्रथम बार मताधिकार प्रदान किया गया — ङ. 1928 ई०

ङ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. जब सारी शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों मे निहित होती हैं तो सरकार का स्वरुप तानाशाही कहलाता है।
2. ''सरकार एक संगठन है जिसके माध्यम से राज्य अपनी इच्छाओं को प्रकट करता है, निर्देश देता है और कार्यों को संपन्न करता है।'' 'डा० गार्नर के अनुसार'
3. हमारे देश मे तीन प्रकार की सरकार है–
   क. स्थानीय शासन (गाँव या कस्बे)
   ख. राज्य सरकार
   ग. केन्द्रीय सरकार
4. संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाओं को मत देने का अधिकार सन् 1928 ई० में दिया गया।
5. लोकतंत्र जनता का, जनता के लिये तथा जनता के द्वारा शासन है। यह विचार अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का है।

च. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. **लोकतंत्र** – लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा शासन है। यह विचार अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का है। हमारे देश में प्रजातांत्रिक शासन को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सरकार का निर्माण चुनाव के द्वारा होता है। जनता अपने चहेते नेताओं को सार्वजनिक वयस्क मताधिकार के आधार पर वोट देती है।

   तानाशाही – जब सारी शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों में निहित होती हैं तो सरकार का स्वरूप तानाशाही कहलाता है। तानाशाह किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं होता है। वह अपने निर्णयों को बलपूर्वक लागू कराता है।
2. प्राचीन काल में लोग एक विशेष समुदाय में रहते थे। उस समुदाय का एक मुखिया होता था। राज्य के कार्यों को संपन्न करने के लिए तथा आम लोगों की भलाई के लिए राज्य को सरकार की आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त राज्य को

महत्वपूर्ण निर्णय लेने में, जनता की परेशानियाँ कम करने, सड़कों, अस्पतालों, विद्यालयों, पुलों, बेरोजगारों को रोजगार सृजन के लिए, रेलवे मार्ग बिछाने हेतु, राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा करने के लिए, शांति, कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए तथा अन्य राष्ट्रों से शांतिपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए सरकार की आवश्यकता पड़ती है।

3. स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व मत देने का अधिकार केवल उन लोगों को था जिनके पास धन, संपत्ति और शिक्षा होती थी। निर्धनों और महिलाओं को मताधिकार प्राप्त नहीं था।

इससे तात्पर्य यह है कि बहुत ही कम लोगों को मताधिकार के द्वारा सरकार बनाने का अवसर प्राप्त था और वे इतनी बड़ी जनसंख्या के भाग्य का निर्धारण करते थे। इस असंवैधानिक प्रक्रिया से गांधी जी और अनेक बुद्धिजीवियों को आघात लगा और इसलिए उन्होंने इस अनुचित प्रक्रिया का विरोध किया तथा सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के अंतर्गत सभी वयस्कों को मताधिकार प्रदान करने की माँग की।

4. हमारे देश में तीन प्रकार की सरकार हैं–

1. स्थानीय शासन (गाँव या कस्बे)
2. राज्य सरकार
3. केन्द्रीय सरकार

भारत में 6 लाख से भी ज्यादा गाँव हैं तथा प्रत्येक ग्राम का प्रशासन स्थानीय सरकार चलाती है। प्रत्येक राज्य का शासन राज्य सरकार चलाती है तथा पूरे देश का शासन केन्द्र सरकार चलाती हैं।

छ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **संसदात्मक सरकार–** सारी कार्यकारी शक्तियाँ संसद में निहित होती हैं। प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद के सभी सदस्य संसद सदस्य कहलाते हैं तथा ये मिलकर सरकार चलाते हैं। इस प्रकार की सरकार भारत, इंग्लैण्ड, कनाडा तथा ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती हैं।

अध्यक्षात्मक सरकार– जब शासन की मुख्य शक्ति राष्ट्रपति में निहित होती है तो सरकार का स्वरूप अध्यक्षात्मक कहलाता है। इस प्रकार की सरकार में कार्यकारिणी तथा व्यवस्थापिका दोनों एक-दूसरे की बिलकुल पृथक होती हैं। देश का राष्ट्रपति सरकार का मुखिया होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में इसी प्रकार की सरकार है।

2. **राजतंत्र –** जब निर्णय लेने की सभी शक्तियाँ राजा या रानी में

निहित होती हैं तो सरकार को राजतंत्र कहा जाता है। राजा शासन के मामलों में सलाहकारों की परामर्श ले सकता है लेकिन अंतिम निर्णय उसी का होता है।

तानाशाही – जब सारी शक्तियाँ एक ही व्यक्ति के हाथों में निहित होती हैं तो सरकार का स्वरूप तानाशाही कहलाता है। तानाशाह किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए बाध्य नहीं होता है। वह अपने निर्णयों को बलपूर्वक लागू कराता है। जर्मनी का शासक अडोल्फ हिटलर ऐसा ही तानाशाह था। वह अपने देश के नागरिकों को विशिष्ट वंशीय मानता था।

प्रजातंत्र – लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा शासन है। यह विचार अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का है। हमारे देश में प्रजातांत्रिक शासन को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सरकार का निर्माण चुनाव के द्वारा होता है। जनता अपने चहेते नेताओं को सार्वजनिक वयस्क मताधिकार के आधार पर वोट देती है।

पाठ–4 : लोकतंत्रात्मक सरकार के प्रमुख तत्व

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

1. तीन
2. 27
3. सहभागिता

ख. रिक्त स्थान भरो –

1. लोकतंत्रात्मक
2. समानता, न्याय
3. अफ्रीकन
4. अब्राह्म लिंकन
5. एक

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ–

1. ✓
2. ✗
3. ✓
4. ✓

घ. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. लोकतंत्रात्मक सरकार मे सहभागिता मूलभूत तत्त्व है, क्योंकि लोकतंत्रात्मक सरकार लोगो की, लोगो के द्वारा तथा लोगो के लिये होती है।
2. रंगभेद (प्रजातीय भेदभाव) की नीति संयुक्त राज्य अमेरिका तथा दक्षिण अफ्रीका मे कुछ समय तक प्रचलित रही।
3. इनमे से लोकतांत्रिक सरकार, विश्व मे सर्वाधिक लोकप्रिय है। अधिकांश देशों मे लोकतांत्रिक सरकार ही गठित है।

4. लोकतंत्रात्मक सरकार एक उत्तरदायी सरकार होती है। चुने हुए प्रतिनिधि अपने कार्यों के लिये लोगों के प्रति उत्तरदायी होते है।

ङ. लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. रंगभेद (प्रजातीय भेदभाव) की नीति संयुक्त राज्य अमेरिका तथा दक्षिण अफ्रीका में कुछ समय तक प्रचलित रही। संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वतंत्रता के बाद अश्वेत लोगों को दासता से छुटकारा पाने के लिए लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा, जो प्रजातीय भेदभाव पर आधारित थी। राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को दासता दूर करने में ही अपनी जान गँवानी पड़ी। संयुक्त राज्य अमेरिका में अफ्रीकी मूल के अश्वेत लोगों को प्रजातीय भेदभाव से छुटकारा पाने के लिए आधी शताब्दी से भी अधिक का समय और लगा।

2. **समानता एवं न्याय** – एक लोकतंत्रात्मक सरकार समानता तथा न्याय के लिए प्रतिबद्ध होती है, जो लोकतंत्र के मुख्य आदर्श हैं। वस्तुतः समानता लोकतंत्र का स्तम्भ है। प्रकृति ने सभी मनुष्यों को एक समान बनाया है, यही लोकतंत्र का आधार है। जाति, वर्ण, धर्म या जन्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता। लोकतंत्र में केवल योग्यता को ही महत्त्व दिया जाता है। कानून की दृष्टि से सभी समान हैं तथा सभी लोगों पर एक जैसे कानून होते हैं। सभी को सार्वजनिक पद प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त होते हैं। किसी से भी कोई विशेष व्यवहार नहीं किया जाता तथा कोई भी कानून के ऊपर नहीं होता। समानता तथा न्याय वस्तुतः अविभाज्य हैं।

3. **जवाबदेही :** लोकतंत्रात्मक सरकार एक उत्तरदायी सरकार होती है। चुने हुए प्रतिनिधि अपने कार्यों के लिए लोगों के प्रति उत्तरदायी होते हैं। यदि वे लोगों की इच्छाओं के अनुरूप कार्य नहीं करते, तो वे दोबारा नहीं चुने जा सकते हैं। मंत्रीगण भी विधायिका तथा जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

च. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. **समानता एवं न्याय** – एक लोकतंत्रात्मक सरकार समानता तथा न्याय के लिए प्रतिबद्ध होती है, जो लोकतंत्र के मुख्य आदर्श हैं। वस्तुतः समानता लोकतंत्र का स्तम्भ है। प्रकृति ने सभी मनुष्यों को एक समान बनाया है, यही लोकतंत्र का आधार है। जाति, वर्ण, धर्म या जन्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता। लोकतंत्र में केवल योग्यता को ही महत्त्व दिया जाता है। कानून की दृष्टि से सभी समान हैं तथा सभी लोगों पर एक जैसे कानून होते हैं। सभी को सार्वजनिक पद प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त होते हैं। किसी से भी कोई विशेष

व्यवहार नहीं किया जाता तथा कोई भी कानून के ऊपर नहीं होता। समानता तथा न्याय वस्तुतः अविभाज्य हैं।

आधुनिक समय में न्याय का अर्थ उन सामाजिक स्थितियों से है, जिनके द्वारा व्यक्ति के आचरण तथा समाज के कल्याण के मध्य उचित संतुलन बना रहता है।

2. समाज तथा देश में विवादों तथा झगड़ों का होना स्वाभाविक है। जब भिन्न संस्कृतियों, धर्मों तथा आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग आपस में सहमत नहीं होते हैं या वे यह अनुभव करते हैं कि उनके साथ भेदभाव किया जा रहा है, तो विवाद उत्पन्न होते हैं। लोग अपने झगड़ों को सुलझाने के लिए हिंसा का सहारा ले सकते हैं। इससे किसी क्षेत्र या प्रदेश में भय तथा तनाव का वातावरण उत्पन्न होता है। सरकार इन विवादों का निपटारा करने के लिए उत्तरदायी होती है। इस तथ्य को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा समझा जा सकते हैं।

कुछ धार्मिक अवसरों पर जुलूस निकाले जाते हैं, जो विवादों को पैदा करते हैं। जुलूस का मार्ग भी विवाद पैदा कर सकता है। अतएव संबंधित समुदाय के लोग स्थानीय सरकारी अधिकारियों (प्रशासन एवं पुलिस) से मिलकर जुलूस की सुरक्षा करने का अनुरोध करते हैं, तब पुलिस जुलूस के साथ-साथ चलकर उसे सुरक्षा प्रदान करती है। वह यह सुनिश्चित करती है कि जुलूस में किसी भी प्रकार की हिंसा या पत्थर फेंकना या जुलूस को रोकना आदि न हो।

नदियाँ भी राज्यों के मध्य विवाद का कारण होती है। कुछ नदियाँ एक से अधिक राज्यों से होकर बहती है। जिन राज्यों से नदी गुजरती है उनके बीच में नदी के पानी का बँटवारा विवाद का कारण बन जाता है। उदाहरण के लिए - कर्नाटक तथा तमिलनाडु से होकर बहने वाली कावेरी नदी दोनों राज्यों के मध्य विवाद का एक प्रमुख कारण है। कावेरी नदी के उपरी भाग में कर्नाटक में कृष्णराज सागर बाँध बनाया गया है, जबकि इसी नदी के निचले भाग तमिलनाडु में मैटूर बाँध बनाया गया है। दोनों ही बाँध सिंचाई, घरेलू एवं औद्योगिक कार्यों के लिए जल प्रदान करते हैं। मैटूर बाँध तभी भर सकता है जब इसमें ऊपरी बाँध (कृष्णा सागर) से जल छोड़ा जाए। इसलिए दोनों राज्य अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने में असमर्थ रहते हैं और उनके मध्य विवाद पैदा होता रहता है। ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार को हस्तक्षेप करके यह सुनिश्चित करना होता है कि दोनों राज्यों में जल का बँटवारा उचित प्रकार से हो।

3. शांतिपूर्ण तरीके से व लोक भागीदारी के द्वारा सरकार को

किस प्रकार झुकाया जा सकता है, इसका अपना सर्वश्रेष्ठ उदाहरण सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने अगस्त 2011 में नई दिल्ली में प्रस्तुत किया। उन्होंने जब जन लोकपाल बिल को पारित करने की माँग को लेकर अपना आमरण अनशन शुरू किया तब देखते-ही-देखते सारा देश उनकी इस माँग के साथ उठ खड़ा हुआ। चारों तरफ से उनके समर्थन में आवाजें आनी शुरू हो गईं। इस माँग के समर्थन में जुलूस निकाले गए। प्रभात फेरियाँ आयोजित की गईं। लोगों ने उनके इस आंदोलन को अपना खुला समर्थन दिया। अंततः 10 दिनों के उपवास के पश्चात् सरकार को उनकी सभी माँगों को मानने के लिए विवश होना पड़ा। ऐसा इसलिए हो सका क्योंकि कोई भी लोकतांत्रिक सरकार लंबे समय तक जनता की माँग को ठुकरा नहीं सकती है। जनता के प्रति सरकार का उत्तरदायित्व बहुधा उसके अलोकप्रिय निर्णयों को परिवर्तित करने में प्रमुख भूमिका अदा करता है।

पाठ-5 : यातायात एवं सुरक्षा

क. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाओ-

1. संकेतन
2. ये दोनों
3. पैट्रोल पंप से

ख. रिक्त स्थान भरो -

1. जनसंख्या
2. अपनी बाएँ ओर
3. यातायात
4. गैस
5. ड्राइवर
6. जंजीर खींचकर, हौजपाइप

ग. सही के सामने ✓ तथा गलत के सामने ✗ का चिह्न लगाओ-

1. ✗
2. ✓
3. ✓
4. ✓

घ. लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. 1. दुपहिया वाहनों पर दो से अधिक व्यक्ति न बैठें।
   2. वाहन तेज गति से न चलाए।
   3. नशीली दवाओं का सेवन करके या शराब (अल्कोहल) पीकर वाहन न चलाए।
   4. वाहन चलाते समय मोबाइल फोन से बातें न करें।
2. 1. सड़क पर सदैव अपनी बायीं ओर से चलें।
   2. सड़क पार करने के लिए सुरक्षित स्थान चुनें।

3. सड़क पार करते समय ट्रैफिक की ओर देखें और उसकी आवाज पर ध्यान दें।
4. यदि फुटपाथ हो तो उसका प्रयोग करें और यदि न हो तो अपनी बायीं तरफ सड़क के किनारे से चलें।
5. सड़क पार करते समय पहले अपनी दायीं ओर देखें फिर बांयी ओर देखें और पुनः दायीं ओर देखें, ट्रैफिक नहीं आ रहा हो तो जल्दी से सड़क पार करें।
6. महानगरों के चौराहों पर ट्रैफिक सिग्नल (लाल/हरा) देखकर चौराहा पार करें।
7. यदि सामने लाल बत्ती जल रही हो, तो चौराहा कदापि न पार करें।
8. रात में वाहन चलाते समय संकेतक का प्रयोग अवश्य करें।
9. साइकिल या मोटर साइकिल सवार व्यक्ति को मोड़ पर हाथ से इशारा करके मुड़ना चाहिए।

3. 1. मोटर साइकिल/स्कूटर चलाते समय हेलमेट अवश्य पहनें।
2. कार चालक एवं इसमें बैठने वाले लोग सीट बेल्ट अवश्य बाँधें।
3. एम्बुलेंस, दमकल और पुलिस जैसे-आपात ड्यूटी पर तैनात वाहनों को रास्ता दें।
4. खतरे के संकेतों एवं सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन अवश्य करें।
5. वाहन के ब्रेक व इंजन हमेशा चेक कराते रहें क्योंकि इनकी खराबी दुर्घटना का कारण बनती है।
6. वाहन चालकों को समय-समय पर नेत्र जाँच करानी चाहिए।

4. 1. टिकट लेकर ही यात्रा करें।
2. चलती रेल पर चढ़ने और उतरने का प्रयास नहीं करना चाहिए क्योंकि इस प्रयास से व्यक्ति विकलांग हो सकता है तथा मृत्यु भी हो सकती है।
3. रेल के दरवाजे पर खड़े होकर यात्रा नहीं करनी चाहिए।
4. रेल की बोगियों की छत पर बैठकर यात्रा न करें।
5. रेल की खिड़कियों से अपने शरीर का कोई अंग बाहर न निकालें क्योंकि बाहर की किसी चीज से टकराकर चोट लग सकती है।

ङ. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. रमेश अपने मित्र के साथ किसी काम के लिए जा रहे थे। रास्ते में एक जगह सड़क दुर्घटना हुई थी। उन्होंने अपने मित्र से कहा, हमें घायल व्यक्ति की मदद करनी चाहिए। उनके मित्र ने जवाब दिया कि इतने लोग हैं यहाँ, कोई न कोई मदद कर ही देगा। यदि हम लोग समय पर ऑफिस नहीं पहुँचे, तो हमारा काम आज नहीं हो पाएगा। अभी वे ऑफिस पहुँचे ही थे कि मित्र के मोबाइल पर घर से फोन आया पता चला कि उनके पिता का एक्सीडेंट हुआ है, और उन्हें बहुत चोट आयी है। जब उन्होंने यह पूछा कि एक्सीडेंट किस जगह पर हुआ तो जवाब सुनकर उन दोनों का चेहरा दर्द और पश्चाताप से भर उठा। उन्होंने भीड़ से घिरे जिस जरूरतमंद की मदद नहीं की थी, वे उनके ही पिता थे।

2. स्वंय कीजिए।

3. **सड़क दुर्घटना से बचाव के उपाय**

   1. मोटर साइकिल/स्कूटर चलाते समय हेलमेट अवश्य पहनें।

   2. कार चालक एवं इसमें बैठने वाले लोग सीट बेल्ट अवश्य बाँधें।

   3. एम्बुलेंस, दमकल और पुलिस जैसे-आपात ड्यूटी पर तैनात वाहनों को रास्ता दें।

   4. खतरे के संकेतों एवं सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन अवश्य करें।

   5. वाहन के ब्रेक व इंजन हमेशा चेक कराते रहें क्योंकि इनकी खराबी दुर्घटना का कारण बनती है।

   6. वाहन चालकों को समय-समय पर नेत्र जाँच करानी चाहिए।

4. ध्वनि प्रदूषण के कारण

   1. उद्योग:- लगभग सभी औद्यौगिक क्षेत्र ध्वनि प्रदूषण से प्रभावित है। कल कारखानों में चलने वाली मशीनों से निकलने वाली गडगडाहट की आवाज से ध्वनि प्रदूषण होता है।

   2. परिवहन के साधन:- परिवहन के सभी साधन कम या अधिक मात्रा में आवाज करते है। निकलने वाली आवाजों से ध्वनि होती है।

   3. मनोरंजन के साधन:- मनोरंजन के उपयोगी उपकरण जैसे टी० वी०, रेडियो टेप रिकार्डर, म्यूजिक सिस्टम (डी० जे०) आदि ध्वनि प्रदूषण के कारण है इनसे उत्पन्न होने वाली तीव्र ध्वनि शोर का कारण बनती है। इससे ध्वनि प्रदूषण फैलता है।

4. आतिशबाजी:- आतिशबाजी यानी पटाखे जलाना पर्यावरण प्रदूषण का सबसे बडा कारण है। यह ध्वनि प्रदूषण के लिये उतना ही जिम्मेदार है। शादी समारोह, खुशी या जश्न का माहौल, दीपावली और राजनीतिक कार्यक्रम ये ऐसे मौके है जब लोग जमकर आतिशबाजी करते हैं।

5. रेल:- रेल आवागमन से भारी मात्रा में शोर होता है। रेल की पटरियाँ का शोर, ट्रेन के लोकोमोटिव इंजन और हार्न की तेज आवाज से लगभग 120 डी बी का शोर होता है। यह शोर ध्वनि प्रदूषण को बडे स्तर पर बढावा देता है।

6. सैन्य उपकरण:- वायु सेना के एअर क्राफ्ट से बहुत तेज शोर निकलता है। ये विमान में पर्यावरण में बहुत बडे स्तर पर धवनि प्रदूषण में वृद्वि करते हैं।

5. **रेल सुरक्षा** : रेल एक शक्तिशाली तथा तेज गति वाला यातायात का साधन है। इसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर शीघ्र ही पहुँचा जा सकता है। रेलगाड़ी से यात्रा करने में बहुत आनन्द आता है परन्तु यात्रा करते समय हमें कुछ सावधानियाँ अवश्य रखनी चाहिए -

1. टिकट लेकर ही यात्रा करें।
2. चलती रेल पर चढ़ने और उतरने का प्रयास नहीं करना चाहिए क्योंकि इस प्रयास से व्यक्ति विकलांग हो सकता है तथा मृत्यु भी हो सकती है।
3. रेल के दरवाजे पर खड़े होकर यात्रा नहीं करनी चाहिए।
4. रेल की बोगियों की छत पर बैठकर यात्रा न करें।
5. रेल की खिड़कियों से अपने शरीर का कोई अंग बाहर न निकालें क्योंकि बाहर की किसी चीज से टकराकर चोट लग सकती है।
6. चलती ट्रेन की जंजीर खींच कर या हौज पाइप काट कर व्यवधान उत्पन्न नहीं करना चाहिए। इससे यात्रियों को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने में देर हो सकती है।
7. रेल में यात्रा करते समय कभी भी किसी अपरिचित द्वारा दिया गया पदार्थ न खाना चाहिए, न पीना और न ही सूँघना चाहिए। हो सकता है कि उसमें कुछ नशीला पदार्थ मिला दिया गया हो जिससे व्यक्ति बेहोश हो जाए और उसका सामान लूट लिया जाए।
8. यात्रा करते समय अपने सामान तथा बच्चों की सुरक्षा स्वयं करनी चाहिए, जहाँ तक हो सके आवश्यक और कम

सामान लेकर यात्रा करनी चाहिए।

9. रात्रि में सामान को जंजीर से बाँध कर सुरक्षित रखा जा सकता है। बोगी या प्लेटफार्म पर पड़ी किसी लावारिस वस्तु को छूना नहीं चाहिए, इस प्रकार की पड़ी लावारिस वस्तु की सूचना रेलवे सुरक्षा बल को देनी चाहिए।

बच्चों, रेल की सम्पत्ति आपकी भी तो है। अगर उसको नुकसान पहुँचाया तो आपका भी तो नुकसान होगा। इसलिए भी बोगी के अन्दर प्रयुक्त किसी भी सामान जैसे पंखा, ट्यूबलाइट, नल तथा सीट इत्यादि को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।